तिथि-जुन,जुलाई-२०१५/अंक-३

navsahitykar.com
sunil@navsahitykar.com

नवसाहित्यकार

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय मासिक वेब पत्रिका

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

जुन,जुलाई - २०१५

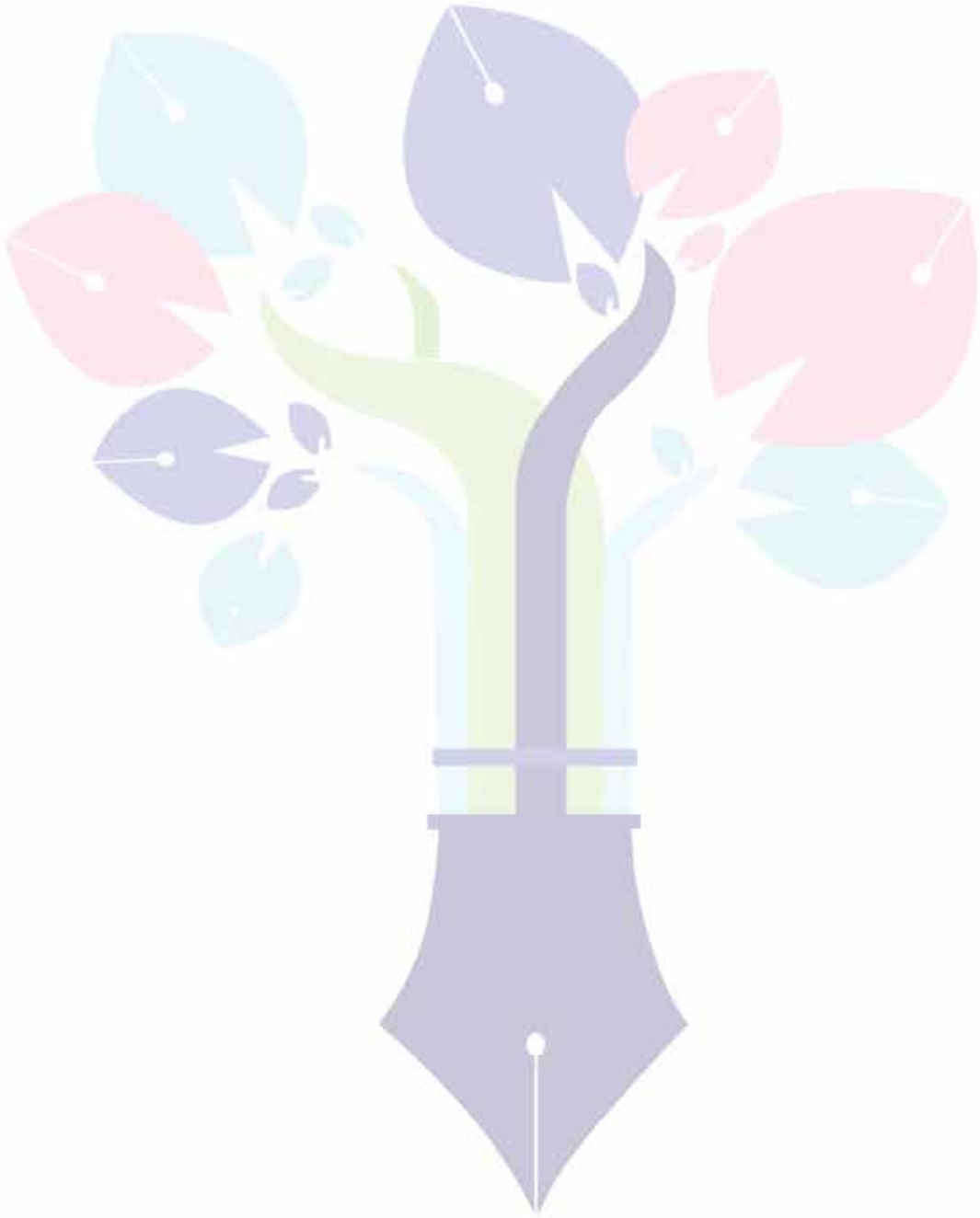

क्रिऐटिव एडिटर

अनिल जाधव, उगम डिजाईन, मुंबई.

9867898945

anil@ugamdesign.com

आर्ट एडिटर

सुचिता जाधव, उगम डिजाईन, मुंबई.

सम्पादकीय कलम से ....

अब की बरसात में वर्षा की बूंदों ने जब तन का स्पर्श किया, तब मन भीतर तक प्रफूल्लित हुआ | प्रसन्नता और उत्साह का नृत्य मात्र मैंने नहीं किया बल्कि उन सब ने किया जो वर्षा की बूंदों का वियोगी था | पेड पौधों में नवजीवन का संचार हुआ | प्रकृति ने विविध रगों से युक्त नववस्त्र धारण किये | जहाँ पुष्प प्रेमियों ने नाना भांति के पुष्प के उपहार पाये वहीं कवि ह्रदय ने अनुपम कविता का स्त्रोत पाया |कोई देख कर मुस्कुराया तो किसीने हँसते-हँसते आँसू बहाए | कोई प्रिय से ना मिल पाने के लिए छटपटाया | ऐसे में प्रकृति, प्रेम और सौदर्य से स्निग्ध कवि जब क़ागज पर अपना मन लिखता है, तब एक अमर रचना का सृजन होता हैं |

''भीगा सावन प्यार में
जल में भीगा बदन
सजनी साजन से करे
कैसे प्रणय निवेदन ?
पिया बिना बरसात में
काटी रतियाँ जाग
वेणी फूलों से लदी
डसता जैसे नाग ....कवि हरिहर झा [आस्ट्रेलिया]''

''क्या कविता का भी अपना कोई मौसम होता हैं ?
जब मैं अपने आप से यह प्रश्न करता हूँ
तब मुझे उत्तर मिलता है कि हाँ,.
..कविता का भी तो मौसम होता हैं |
कभी खुशी कभी गम के साथ
उसमें जीवन भी तो होता हैं |
हाँ,... कविता काभी तो अपना कोई मौसम होता हैं |

और मुझे लगता है कि
कविता मौसम के अनुसार बनती रहनी चाहिए |
उसमें नदी-सा धारा प्रवाह हो...
समन्दर जैसी गर्जना हो ..
फूल-सी कोमलता हो ..
काँटों-सा व्यंग्य हो ...
अनंत आकाश की तरह किस्सागोई हो ..
तेज धुप की तरह यथार्थ भी हो |'' {सुनील जाधव}

आज का सदा तरुणमन का नव साहित्यकार जरुर ऐसा ही लिखता हैं | वह समय का गुलाम तो नहीं पर समय को जरुर खूबसूरत यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने में भी नहीं चुकता |

काँटों पर तो हम भी चलते है जनाब
साहस-वीरता तो इसमें होगी कि
फूल की सुरभि कोमलता के साथ जीवित भी रहे
और आप पग बढ़ाते भी चलते चले .... {सुनील जाधव }

चलते-चलते अंत में मैं इतना कहना चाहूँगा कि सुधि पाठक एवं साहित्यकार जिस प्रकार से नव साहित्यकार पत्रिका को आशीर्वाद, प्रेम स्नेह, प्रोत्साहन से रसास्निग्ध कर रहे हैं | मैं उन सभ का ह्रदय से आभारी हूँ | भविष्य में नव साहित्यकार का यह तीन अंक वाला बालक आप की कसौटी पर खरा उतरेगा | आशा है, यह बालक समय-समय पर उचित मार्गदर्शन-प्रोत्साहन के साथ वृन्द्धिगत होता रहेगा |

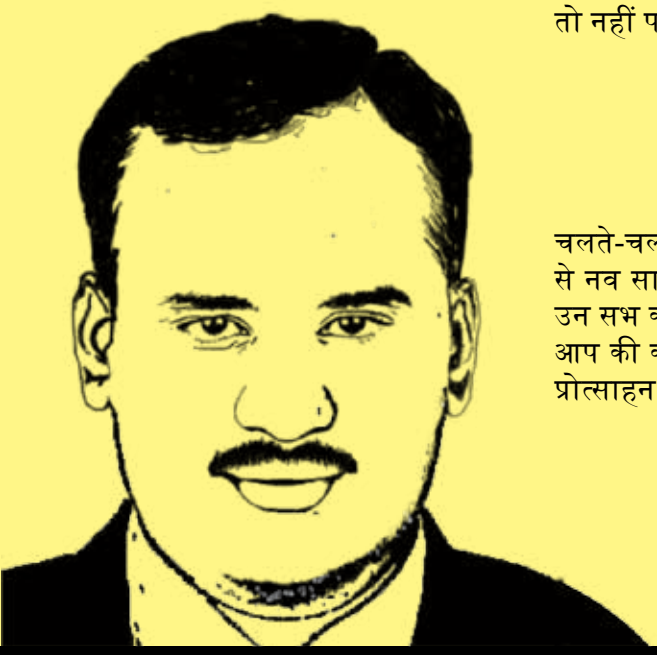

नवसाहित्यकार
शोध, साहित्य एवं संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय नासिक वेब पत्रिका

डॉ.सुनील जाधव

मुख्य सस्थापक सम्पादक :- डॉ.सुनील जाधव
नांदेड, महाराष्ट्र, भारत

परामर्श मंडल / प्रतिनिधि

विदेश में :-

१. प्रो.सरन घई-कैनडा

२. किटिपोंग बोंकेड, थाईलैंड

३. रिदमा निशादिनी लंसकारा-श्रीलंका

४. मोरिशियस-रेशमी रामधोनी

५. राम प्रसाद भट्ट-हैम्बर्ग ,जर्मनी

६. इंदिरा गजेवा-मास्को, रशिया

७. शरद अलोक-ओस्लो, नार्वे

८. पंखुरी सिन्हा-कैलगरी,अल्बर्टा

९. प्रोमोद धिताल-दांग,नेपाल

१०. नारायण पोखरे-ओक्लाहोमा सिटी, ओक्लाहोमा यूनाइटेड स्टेट्स

११. सुनीता नेउपाने-मस्कट, ओमान

देश में:-

१. जयप्रकाश मानस -छत्तीसगढ़

२. डॉ.हरीश नवल,नई दिल्ली

२. पंकज त्रिवेदी-गुजरात

३. एकांत श्रीवास्तव, कलकत्ता

४. संतोष श्रीवास्तव, मुंबई

५. ॲड. आशा ओझा-राजस्थान

६. डॉ.मुकेश कुमार मालवीय-उत्तर प्रदेश

७. प्रो.दामोधर मोरे,मुंबई

८. डॉ.प्रमोद शर्मा-महाराष्ट्र

९. डॉ.चन्द्रकांत मिसाल-महाराष्ट्र

१०. डॉ.हाश्मवेग मिर्झा-महाराष्ट्र

११. डॉ.आशा नायर-केरल

१२. डॉ.सुनील पारिट-कर्नाटक

१३. डॉ.कालीचरण स्नेही- उत्तर प्रदेश

१४. डॉ.महासिंह पुनिया-कुरुक्षेत्र, हरियाणा

अनुक्रमणिका ....

व्यंग्य -
१.श्याम स्नेही
२.अशोक परूथी-अमरीका

कविता –
१.सरिता पंथी-नेपाल
२.प्रवीण गोदेजा
3.चंद्रशेखर तापी
4.चंचल भसीन
५.ऋषिकेश सारस्वत
६.पवन चौहान
७.नवनीत कुमार सिंह
८.पुनीता सिंह
९.प्रदीप यादव
१०.मजहर मुदस्सिर
११.संजय वर्मा
१२.सुशीला शिवराण

लघुकथा-
१.सविता मिश्र
२.सांध्य तिवारी

गज़ल
१.अलका मिश्र
२.अवधेश कुमार जौहरी
3.बैजनाथ शर्मा

कहानी-
१.करुणा पाण्डेय

आलेख-
१.संदीप कुमार सिंह
२.सोनटक्के साईनाथ चन्द्रशेखर

व्यंग्य

व्यंग्य..... बाबा भूतनाथ का अखाड़ा

श्याम स्नेही

रोज की तरह आज भी ढलती सर्द शाम में बाबा भयंकर नाथ के हवन स्थली में लोगों का जमावड़ा सा होने लगा |श्मशान घाट के निस्तब्ध निशारात्रि में हवन की शुरुआत में तो विलम्ब था पर, आवृत्त किये हुए कुछ अल्प-वस्त्रधारी जरुर जुटे थे, जिन्हें शीत से बचने के लिए धुनी की आवश्यक आवश्यकता प्रतीत हो रही थी |शहर की आवादी इतनी बढ़ चुकी कि श्मशान का सूनापन एक सपना सा लगने लगा | कुछ ही दूरी पर पडनेवाले झुग्गी-झोपड़ियों में बसे अपने ही देश में अप्रवासी स्वरूप जीवन-यापन करने आये सर्वजातीय सर्वहारा वर्ग के विभिन्न प्रदेशों से रोजी-रोटी की समस्या से जूझते लोगों ने थोड़ी नीरवता भंग की है |लेकिन एक बात है दिन भर के भाग-दौड़ की जिन्दगी से थके लोगों की बस्ती अनजान ख़्वाबों में खो जाती है | फिर वही निस्तब्धता श्मशान में पुन: स्थापित हो जाती है, वो भी लगभग एक प्रहर बाद | इसलिए ही तो बाबा ने तन्त्र साधना के निमित्त अर्धरात्रि की वेला निश्चित की है |सभी दिनभर की थकान धुनी के तपन में जलाकर भजन में मशगूल हो जाते हैं | सबके अपने-अपने राग हैं, सुर हैं और ताल हैं | कोई गुरूजी के महिमा का बखान करता है तो कोई ख्वाजा के नाम की कौव्वाली | कोई राम-कृष्ण का भजन तो कोई मौन रहकर कन्फेस करता है | कोई भैरवी तो कोई राग भोपाली में तान छेड़ता है | तभी तो किसी का सुर किसी के ताल से मेल नहीं खाता है |

इतने में अभी-अभी आया रामखेलावन तिपहियावाला बोल उठा- "अजी सुर तो सुर अलाप भी किसी को कायदे से लेना नहीं आता | हमारे गाँव के गुरुजी थे पक्के और पुराने शास्त्रीय गायक बाबा बरेलवी | क्या गाते थे दिल फ्रूटफुल हो जाता था |"

एकबार मेरे मन ने भी पाला बदल लिया, जबकि उम्र पढने की थी और मैं संगीत सीखने गुरूजी के पास जाने लग गया | ट्यूशन के नाम का दो घंटा गुरूजी के पास बिताने लगा और ट्यूशन फीस के पैसों से गुरुजी के लिए उपहार सामग्री बीच-बीच में भेंट करता रहा | महीनों महीनों एक ही सरगम का रियाज कराते दो-चार महीनों में अकाद बार बोल जाते अभी और रियाज की जरूरत है | परिणाम तो तब समझ में आया जब मैट्रिक की परीक्षा भी पास नहीं कर सका |आज जो कुछ भी आप सबको टूटे-फूटे राग में सुना पा रहा हूँ बस, मानो उनकी ही देन है | इन सबको तो अभी बहुत कुछ सीखना बांकी है और आप लोग हो कि इनसे ही उम्मीद करने लगे कि अच्छे और मंजे हुए गायक की भूमिका निभाएं | आप सबके ही समझदानी को दाद देनी पड़ेगी |" पास बैठे रिक्शा चालक, खोमचेवाले, रोज दिहाड़ीवालों से मुखातिब होते हुए कहा |एक ओर भजन का शोर तो एक ओर अपने-अपने लघु खंडों में विभाजित लोगों के गूंजते स्वर साथ ही सबके अपने-अपने दु:ख और दुखड़ों का शोर | ढुलकू अखबारवाला उठना ही चाहता था कि सेठ धन्नालाल की विदेशी कार चों.... की आवाज से धरती को चुमते हुए रुकी | बाबा समेत उनके पट्टशिष्य की श्रेणी के लोग आश्रम के पिछवाड़े नदी के किनारे हवन-कुंड स्थल की ओर रवाना हो लिए | बाबा भयंकर नाथ के गगनभेदी जयघोष के साथ ही सभी अपने-अपने निवास की ओर खिसकने लगे |फिर वही चिरपरिचित निस्तब्धता धीर-धीरे व्याप्त होने लगी | सभी हवन कुंड के चारों ओर अपने आसन ग्रहण कर चुके तो परम ज्ञानी श्यानचंद चरणामृत स्वरूप पेय पेय-पात्र में परोसने लगे | पूर्व में ही हवन के लिए सारी पंच मकार सामग्री भी उपलब्ध करा दी गयी थी | मंत्रोच्चार के रूप में "चीयर्स" के साथ हवन का मूड बनाया ही जा रहा था कि चौपट मिल के मालिक पोपटमल ने बाबा के समक्ष एक यक्ष प्रश्न उछाल दिया – कि बाबा इस बार दिल में क्या हो रहा है ?तभी तहसीलदारी से सेवानिवृत्त छोटू सिंह बोल पड़ा – और क्या होगा इस बार शिव तांडव के अलावे | घनघोर ग्ताओं के बीच बार-बार बिजली चमकेगी और इस रोशनी में कोई भी किसी का चेहरा ठीक से देख भी नहीं सकेगा और पहचानने की बात तो दूर | स्वाहा | बीच में ही टपकते हुए रमुआ सेवादार बोल उठा – किसी का कुछ हो ना हो पर अपना तो झोपडी तत्काल टूटने से बच ही गया | रोज-रोज के टेंशन से कुछ दिन तो छुटकारा मिल ही गया और अब जब भी टूटेगा तो पक्के मकान में ऐश करेंगे | दो-चार महीने में ही मरम्मत के लफड़े से छुटकारा भी मिल जायगा | ऐसा भरोसा तो नहीं लगता फिर भी भरोसा तो करना ही पड़ता है क्योंकि उम्मीद पर ही दुनियाँ जीती है | स्वाहा |

रामखेलावन तीसरे दौर का हवि हाथ में लिए हुए – मंत्रोच्चार के रूप में बकबकाने लगा – बैंकवाले हर दुसरे-तीसरे दिन आ धमकते थे और ताने देते कि जब ई रिक्शा चलाना ही गैर-कानूनी हो गया तो क़िस्त कैसे देगा | गलियों में लुक-छिपकर, साहब लोगों से ताल-मेल बिठाकर चलाते-चलाते परेशान हो गया था | अब तो क़िस्त भी नहीं निकलता | वो तो कहो बिटिया के नौकरी का जो घर-खर्च के साथ किस्तों में घटे पैसों का भी जुगाड़ कर लेती है | जब तिपहिया ली थे तो अच्छी कमाई कर लेता था | सभी खुश थे | लगता है वही खुशी फिर से आनेवाली है | स्वाहा |

अगले दौर की हवि ग्रहण करते हुए कल के मुक्केबाज मुक्कमल मियाँ महतो

ठेकेदार ने भी मंत्रोच्चार प्रारम्भ किया- जन्हें नजदीक से नजरें भर देखने को नजर तरसती रही वही अब हमारे दरवाजे पर दर्शन देने को दस्तक देने लगे | स्वाहा |

इस तरह स्वाहा का दौर चल ही रहा था कि धन्ना सेठ के फोन की घंटी घन-घना उठी, जिस पर दिल्ली दरबार से हवन के कुछ मन्त्र निर्देशित हो रहे थे | अंतर्जाल से ग्रसित और भ्रिमतों का स्वाहा |

सबके सपनों का आश्वास्ताय स्वाहा |

जातिगत और विभाजित वर्गों के नाम स्वाहा |

लड्डू लडे - बुंदिया झड़े के मध्य आकाश से टपकाय स्वाहा |

इस तरह आज आज के हवन का कार्यक्रम टूल्ल अवस्था को प्राप्त हुआ और सभी अहिस्ते-आहिस्ते अपने औकात के आवास की ओर लपक लिए |

फिर वही सूनापन और निस्तब्ध निशा में श्वेत चादर में लिपटे जनमानस की लाश को दफनाते लोग |

ख़ानाबदोश यह भारतीय कलाकार ! (हास्यव्यंग्य)

अशोक परुथी "मतवाला"
अमरीका

मेरे खुशहाल और सोने की चिड़िया कहलाये जाने वाले भारत में आज सवा-सौ करोड़ से भी ज्यादा जनता फल फूल रही है! जब भी (गल्ती से) मेरा भारत जाना होता है तो अपने दोस्तो-यारों के रहन-सहन की अपेक्षा अपने फटे-हाल को देखकर ताजुब करने लगता हूँ कि वहाँ कैसे एक मामूली से मामूली इंसान के पास भी यह गाडियाँ, बंगले, और नौकर-चाकर हैं और उनका साधन क्या है? भले ही मुझे इसकी तनिक भी तकलीफ न होती हो लेकिन कभी-कभी ईर्षा होना तो स्वाभाविक ही है! लोगों के पास वहाँ सब कुछ है, नही है तो बस एक मन की शांति और सब्र .. इसके साथ लोगों में प्रभु का कृतार्थ होने का अभाव भी जोड़ लें! लोगों में हाल दुहाई मची हुई है, पैसा, पैसा और पैसा! आज तक मुझे इस बात की समझ नही लगी कि लोग अपनी समृद्धि के लिए वहाँ कैसा धनिया, कोई चूना या बाबा रामदेव द्वारा निर्मित किस किस्म का चूरन या गौ-मूत्र बेच रहे हैं ? या फिर यह सब लोग अपनी किस्मत के धनी है जो उनकी ज़िंदगियों में "दिन में दो गुणा और रात में चौगुणा' गुलाल (रंग) ला रही है! मैंने पियकड़ों की तरह कभी नही पी, कभी वैश्य वृति और जुए खाने का रास्ता तक नही देखा। कभी एक धेला भी व्यर्थ में खर्च नही किया। बस दो बच्चे और एक सीधी-साधी (बिलकुल सिम्पल, बिना जुबान वाली) पत्नी का खयाल रखा है (वह अपना कमाती-खाती रही है, मेरे पर वह कभी बोझ बन कर नही रही और न ही उसका ग्रह-ग्रहस्थी के खर्च में कोई योगदान ही रहा है।) बेगम का 'मेरा भी मेरो और तेरा भी मेरो' भक्ति-भाव ही रहा है ! बच्चे भी अपनी ज़िंदगियों को दांव पर लगाकर,अपनी हिम्मत से, पढ़ लिख गये/रहें है! दूसरों के आलीशान झोपड़े देखकर एक दिन जब बेगम राम दुलारी से रहा न गया तो अपने दिल की बात मुझसे 'शेयर' किए बिना वह रह न सकी - "न्यू टेरीटरी" (कीमती घरों वाला एक मुहल्ला, उस वक़्त) में सुना है बड़े अच्छे घर है, हम उधर कब 'मूव' होंगे?" "हनी, मेरी तरफ से देर थोड़ा है, तुम अपने नाम से कल घर खरीदो और मैं वादा करता हूँ कि परसों तक मैं तुम्हारे साथ 'मूव' हो जाऊंगा!" मेरा उतर स्पष्ट था! यकीन करें, यह मेरा खुदा ही जानता है या राम दुलारी, क्योकि यह बात हमारे दोनों के बीच हुई थी! वह दिन गया और यह दिन आया कि बेगम रामदुलारी ने आज तक एक नये घर खरीदने का सुझाव मेरे सम्मुख रखने का दुस्साहस नही किया! पिछले पच्चीस सालों में ले-देकर मैंने पच्चीस 'मूवीज़' देखी होंगी, आपकी कसम। मैं यह बढ़ा-चढ़ा कर नही कह रहा हूँ कि इस दौरान मुश्किल से मैंने पच्चीस बार ही घर से बाहर खाना खाया होगा, अगर मेरी याददास्त नही मारी गई, तो! मेरे पास पहले दिन से ही अमेरिका में बड़े भाई साहिब की बदौलत 'छैवी नोवा' थी। आज मैं कार-वार छोडकर 'मोटरसाइकल' पर अपनी "कलही जिंदड़ी" लिए फिरता हूँ! अपना भी क्या 'लक' (38 इंच, मेरी कमर का घेरा) है! अपनी शादी का सूट मैं आज भी डालता हूँ लेकिन शादी की पेंट तो मेरी अब फट गई है। पिता जी ने दर्जी को यह कह कर एक-एक दो दो इंच बड़े सूट-पेंट सिल्वा दिये थे कि बेटा बड़ा हो रहा है, उन्होने उसे यह बताया था कि मेरा शरीर आने वाले सालों-महीनो में पसरे-गा और थोड़ा फैले गा भी! कितने दूरदर्शी हमारे "पेरेंट्स" हुआ करते थे। आज कल के माता-पिता को तो अपनी होश नही, वह क्या करेंगे 'प्लानिंग?" किसी ने सच ही कहा है कि हमारी नई पीढ़ी तो अब सोफ़े पर बैठा करेगी यह 'जीन' पहनने वाली नारियां मेरा मतलब मातायेँ, 'डालर' तो बेशक घर कमा ले आयें मगर वे अब अपना आँचल कहाँ से लायेंगी? पिछले पच्चीस सालों में जब तक मुझसे हो सका, मैंने एक साथ दो-दो नौकरिया की हैं, फिर भी मैंने अपने को वही का वहीं पाया है। अब अपने फटे हाल को देखता हूँ तो लगता है जैसे अमेरिका में मैंने पिछले 25 सालों बसर कर बस घास ही बेची है ! घर में सब से निकम्मा मैं ही निकला हूँ ! पल्ले नही है धेला और करता फिरता हूँ मेला-मेला ! लेकिन यहाँ आये दिन भारत से कोई न कोई कलाकार भारत छोड़कर आया फिरता है । पिछले छह महीनो में गायक अजित, अदनान सामी, अंकित तिवारी, लता जी, वो अपने डॉक्टर कुमार विश्वास जी (पाकिस्तान के कुछ आलतू-फालतू कलाकारों का तो मैंने अभी नाम भी नही लिया और न ही मैं इसकी आवश्यकता समझता हूँ), हास्यकार, अरुण जेमिनी ऐंड कंपनी और उनके इलवा अन्य कलाकार ह्यूस्टन के अलावा अमेरिका के दूसरे शहरों में अपने दौरे कर चुके है। आने वाले दिनो में ह्यूस्टन में लता जी की लड़ाकी बहिन और गायिका आशा जी का शो बुक है! मैं पता नही क्यूँ अपने पंजाबी सिंगर - 'ओए लककी लककी ओये' वाले मिक्का सिंह को भूल रहा हूँ, वह तो एक महीने में शायद दो बार आये थे । कहते हैं, उन्होने जो पहली बार गाना लोगों को सुनाना था वह उनके ज़ेहन से उतर गया था, मेरा मतलब वे उसे सुनाना भूल गए थे, इसलिए उनको फिर से आना पड़ा था! गायक शान भी अपनी बच्चा पार्टी के साथ इस महीने के अंत में ह्यूस्टन पधार रहे हैं! अब इन ख़ानाबदोश और बंजारे भारतीय कलाकारों को कौन समझाये कि यह देश हमारे लिए भी पराये ने, घरां दे किराये ने, पप्पू ते पिंकी दियाँ फ़ीसां ने, कार-ट्रक, "हैल्थ" अते घर दे बीमे दियाँ

कीशतां ने, इनहा नाल निपटदेयां हाँ ते जीवन-बीमा वाले खैड़ा नही छड्डे, कहिन्दे दे अपना जीवन-बीमा कराओ ते सुख चैन नाल मर जाओ! डॉ॰ कुमार विश्वास जी को तो यहाँ के देसी बाज़ार "हिल्क्राफ्ट" के एक रैस्टौरेंट की रोटियों का ऐसा चस्का लगा है कि हाल ही में, उन्होने भारत से यहा पर अपना दूसरा चक्कर लगाया है। मैंने उनके कुछ नज़दीकियों से सुना है कि डाक्टर साहिब अपने साथ कुछ 'नान' के साथ कढ़ी के कुछ 'आर्डर' बँधवा कर भी अपने साथ 'कनाडा' लेकर गए है। पता नही वहाँ ऐसा खाना मिले या न मिले! (यह मेरी जानकारी है या कुछ लोगो द्वारा फैलाई हुई अफवाह, अंदाज़ा आप खुद लगायें) मैं चुप रहूँगा और कुछ नही कहूँगा! कुमार विश्वास जी भारत के एक स्वतंत्र नागरिक है और आम पार्टी के नेता होने की वजह से उन्होने कई जगहो और जहां से भी उन्होने चुनाव लड़ा था, वहाँ से... चुनावों के दौरान अपना दिल खोलकर लोगो के हाथो खूब खटाई मेरा मतलब पिटाई खाई है! अब उनके पिता एक मिनिस्टर तो है नही और "आप' पार्टी वालों ने भी उन्हे मंत्री बनाया नही, सरकार उन्हे कोई नौकरी करने देती नही...आपकी तरह उनको भी तो अपने बिलों का भुगतान करना है कि नही? कुछ न कुछ तो करना है उन्हे, आप निखट्टूओं की तरह तो वे सौफ़े पर बैठेंगे नही! इसके बावजूद अब आप को इसमे क्या एतराज़ है कि वह अपनी कवि रेलियाँ मेरा मतलब कवि-गोष्ठियाँ अमेरीका में आकर करें, जापान या चीन जा कर करें जहां हिन्दी बोलने वाले बंदे या बंदो की जात तक नही! नही, नही, इसमे कोई लड़ाई वाली बात नही है...मैं तो बस बात कर रहा हूँ... फिर भी पहले आप बताए कि इसमे आपको कोई एतराज़ है क्या, है कोई?मेरा एक दोस्त है - जिसका नाम है कैची - कल रात हैरत से मुझसे पूछने लगा, "अशोक जी, यहाँ ऐसा क्या है जो भारत जैसे विशाल देश को छोड़ कर अमेरिका जैसे छोटे देश की और यह विदशी कलाकार आए दिन टपके पड़े हैं (भारत अब हमारे लिए विदेश है, मेरे से तो पिछली बार भारत ने भारत की नागरिकता छोडने (डिनाऊसिंग सिटिज़नशिप) का पर्चा भी भरवा लिया था! पता है भला क्यूँ ? विदेशी मुद्रा ईकठा करने का एक और धंधा भारत ने ढूँढ निकाला है। भारत सरकार को पाँच सो डालर दो और फिर चाहे भारत में घर खरीदो या वहाँ जाके पान की दुकान चलाओ! मैंने पहले भारत की ईछानुसार पर्चा भरा तब जाकर मुझे अपने जन्म-देश भारत का दर्शन करने के लिए 'टुरिस्ट वीज़ा' दिया गया! करलों बात, क्या सिला दिया अपने भारत ने हमको...किसकी माँ को अब हम मासी कहेंगे? लेकिन, मेरे दोस्त कैंची की राय मुझसे बड़ी भिन्न है! इस मुद्दे को लेकर हम दोनों में मतभेद है - मेरा मानना है कि कैंची कुछ लोगो की बातों में आकार गुमराह हो गया है! लेकिन, उसकी राय तो उसकी राय है और मेरी राय की तरह वजनी है... कैंची कहता है इन कलाकारों के मुंह अमेरिका का 'ग्रीन" डालर ऐसे लग गया है जैसे कुते के मुंह हड्डी! मुझे बात तो कैंची की भी दुरुस्त लगती है, सोलह आने खरी, क्यूंकी मुझे नही लगता कि एक दो कलाकारों को छोड़कर किसी कि मासी या चाची यहा रहती है! आप किसी के पास इस बात को लेकर यदि कोई सूचना हो तो मेरे साथ 'शेयर' करें और मैं इस लेख के जरिये अपनी भूल-सुधार करने के ईलावा अपने गल्ती कबूल कर लूँगा ! मुझे तो कैंची के प्रश्न का कोई उपयुकत जवाब समझ नही आया, सिवाय उस दर्जी के जवाब की तरह जिससे उसके शागिर्द ने शहर में कई और चेले देखकर कर पूछा था, "गुरु जी, अब रोटी कहाँ से और कैसे चलेगी? चेले बहुत हो गए हैं, शहर में...!"

"फिक्र मत कर बेटा, भूखों मरते शहर छोडकर चले जाएंगे!" उस्ताद दर्जी का अपने शागिर्द को जवाब था! आपकी जेब में रोटी के पैसे हो या न हो, आपके' पप्पू' या 'कुक्कू' के पाँव में 'केंची' मार्का चप्पल हो या न हो (ओह, तो आपने अब अपने ABCD (American Born Confused Desi ya fir American Born Cool Desi) बच्चो के नाम 'हरी' की जगह 'हेरी' और 'सुभाष' की जगह 'सेम' रखे हुए है तो मेरी गल्ती...मैं तो अब पुराने युग से हूँ न? लेकिन अपनी टिकिटआज ही खरीदें! पता नही कल भारत सरकार डॉ विश्वास जैसे कलाकारों पर विदेश जाने की पाबंदी लगा दे और उनके पग में घुंगरू बांध कर वहीं बंदी बना दे तांकी वह वही रहकर 'कोई दीवाना कहता है' सुबह-शाम करते रहें या फिर ता ता थईया करें, यह डाक्टर साहिब की मर्ज़ी है! अरे, अगर ऐसी ही कोई बात है तो वह वही रहकर अपने आप को अस्पताल में भर्ती करायेँ। यहाँ विदेश में आकर लोगो को अपने दीवानेपन और पागलपन की बात बार-बार गा-गाकर सुनाने-बताने की क्या ज़रूरत है? लोगों के कान पक गये हैं अब तो! डाक्टर साहिब नही थके अभी तक, लेकिन लोगों के कानो से धुआँ निकलने लगा है! मेरे एक मुखबर का यह मानना है कि शायद डाक्टर कुमार विश्वास जी का यह अंतिम विदेशी दौरा हो क्योंकि मोदी सरकार पिछले कई महीनो से यह भरसक प्रयास कर रही है कि 'यह चरखा' बहुत जल्द उनके चंगुल में हो। लेकिन देखना अब यह है कि बकरे की माँ कब तक खैर मनाती है! बहरहाल, जब तक इन विदेशी कलाकारों का अमेरिका में बसे देशी लोगों के सिर पर भूत सवार है तब तक मैं लोगों की खिदमत करता रहूँगा। दूसरे देशों में बसे देसियों का मैंने कोई ठेका नही ले रखा। अब अमेरिका में अगले कलाकार कब मनोरंजन के लिए आपके शहर में तशरीफ ला रहें हैं या लाएँगे, यह जानने के लिए आप मेरे इस फेसबूक पेज को पढ़ते रहें और मुझे 'टाइमली सूचना' देने के लिये मौका दें...मैं हूँ ना?

कविता

कविता ..... अम्मा मुझे ना भेजो ससुराल

सरिता पन्थी
महेंद्रनगर, नेपाल

अम्मा मुझे ना भेजो ससुराल
पढ़ लेने दो अम्मा मुझको
मुझको भी कुछ करना है|
जीना है जीवन ये मुझको
रोज रोज ना मरना है|
दे दे माँ तू भीख में जीवन
कर्ज तेरा मैं चुकाऊँगी|
समझ ना मुझको अबला नारी
बेटे का फर्ज निभाऊँगी|
भाई की झूठन खाकर ही
जिन्दा मैं रह जाऊँगी|
पढ़ लूंगी जो दो अक्षर तो
इंसा मैं बन जाउंगी|
माना जीवन तुमने दिया है
मैंने भी कब अपराध किया है|
साँसे बस चलती हैं मेरी
जीवन मैंने कब ये जिया है|

2.बलि प्रथा

बलि की आती बात देवी का लेते नाम
क्यूँ कर दिया समाज ने स्त्री को यूँ बदनाम|

संस्कृति हमारी सर्वश्रेष्ठ कलंक बन गयी है बलि
कोई बताये हमको प्रथा कब,कहाँ से चली ?

देवी तो है नारी नारी मन निष्पाप
देते बलि निरीह की खुद के बढाते पाप|

नही पढ़े है मैंने पोथी और पुराण
जननी रूप है देवी कैसे ले सकती जान ?

बलि चढाओं स्वार्थ को बलि करो अहंकार
छल द्वेष को पालते निरीह को रहते मार|

अंधा हो रहा समाज अपने ही सुख के आगे
पाप हत्या का लेता देवी से रक्षा मांगे|

सर चढ़कर बोलेगा हत्या का ये पाप
छोड़ दे देवी आसन अपना, उससे पहले जाओ जाग ||

कविता .....

प्रवीण गोदेजा
रायपुर

कविता-(1)

एक अदद चश्मा आई का
आज
छोड़ आया
मरघट की ज्वाला में
देह ,
बसा आया
मन में
अनकहे सच /
शेष अशेष
अब कुछ भी नहीं
अतीत के सिवाय ,
टेबल पर रखा
एक अदद चश्मा
आई का .....
बंद आँखों का
चश्मदीद सच
सिखाता
सारे घर को
शेष अशेष
अब कुछ भी नहीं
अतीत के सिवाय
सुलझ गई कब
दीवारी चटाई पर
कांटो में उलझी घडी
सुबह की रांगोई
शाम का दिया
हर कारज करती
मुझमे रह कर
मैं तुमजो हो गया हु .....
(2)

मेरा क्या होंगा
क्यों
अपने चेहरे पर
अपने शब्द लिए
घूमते फिरते हो ,
डर नही लगता
हत्या का
कुछ तो सोचो
मेरा क्या होगा ?
क्यों
अपने चेहरे पर
दूजो का दर्द लिए
घूमते फिरते हो
डर नही लगता
खुशी का
कुछ तो सोचो
क्या होगा मेरा..
सुबह शाम
अपने कृष्णा से
तुम्हारी दुआए
मांगती रहती हु ....
क्यों
चेहरे पर
अपने शब्द लिए
घूमते फिरते हो
डर नही लगता
हत्या का
कुछ तो सोचो
क्या होगा मेरा ,
(3)

दादाजी
मैं अब भी
उठ जाती हू
सुबह सुबह
और
पीला आती हूं
नन्हें पौधो को
लोटे भर पानी /
सीख था मैंने
दादा की ऊँगली पकड
पौधो का जीना
अपनी ही तरह /

अब भी
गुजर जाती हू
सुबह सुबह
बिच्छूई सर्पीली राहों पर
जिन पर
नाम नही होता
बस होता है साहस
दादा की तरह

अब भी
रात होते ही
देख देख जाती हूँ
चाँद को
जिसे मामा ही कहते थे
दादा जी
और यह बताते थे
मेरा जो मामा है
तुम्हारा भी मामा

मैं अब भी
लिख आती हू
मन पट्टी पर
प्यार की परिभाषा
नन्हे हाथो की खड़िया से
जैसे दादा

भूलू क्यों
दादा को
जानू क्यों
आधा को
रहूंगी मैं पूरी ,
दादा जी
बहुत दूर
पर कंहा उनसे दुरी .....
(4)
मैंने जिया है हमेशा तुम्हारे रँग में .....
तुमने
जो रँग
उपहार में
दिए थे
मैंने
उन्हें सहेज कर
रख लिए थे
इन दिनों के लिए ,
में जानती थी
तुम नही आओगे

इस जन्म में ,
याद है
तुमने
एक डिब्बी में
ढेर से रंगों को
मिला कर
मेरी हथेली पर
रख दिए थे
और कहा था
गुगु ,
इन्हें रख लो
मेरी जिंदगी के
सारे रंग
तुम्हारे है
सँभाल कर रखना ,
मैं उसी दिन
जान गई थी
तुम्हारा और मेरा
मिलन
इस जन्म में
ना होगा
तुम
बहुत रोये थे
मेरी गोद में
मैंने तुम्हारे
ढेर से आंसुओ को
इन रंगों की तरह
छुपा लिया था
अपनी आँखों में ,
हर रँगपंचमी
तुम्हारे दिए रँग
चुपचाप लगा लेती हू
क्युकी
मैंने जिया है
हमेशा
तुम्हारे रँग में .....

कविता ..... आसमान में नही

चंद्रशेखर तापी
भोपाल

जब भी होती है बात
उस जगत के पालनहार की
सब उस आकाश को देखते हैं
सदियों से किस्सों, कहानियों ,फिल्मों से
हम सब यही तो सीखते हैं
कि भगवान ऊपर आसमान में हैं।
जब इस धरा पर आता है भूकंप
तो पृथ्वी डोल जाती है
कभी आती है सुनामी तो
संसाधनों को भी अपने में घोल जाती है
तब आकाश से कोई नहीं आता
बिछडों को कोई नहीं मिलाता
फिर बढते हैं जो हाथ मदद को
तब लगता है कि यही जो
इंसानियत से भरे इंसान हैं
सही अर्थों में ये ही तो भगवान हैं।
वह परमात्मा तो
कण कण में भरा है
तभी तो मिलता है हमें जल
और प्राण वायु के लिये
वृक्ष भी हरा भरा है
स्वार्थ के लिये जीवन को न काटें
एक दूसरे के दुख दर्दों को बाँटें
फिर समझेगी दुनिया कि
यहाँ हर व्यक्ति को
मानवता का ध्यान है
तब हम कह सकेंगे कि
इस धरा पर पर भी भगवान हैं।
स्वर्ग की कल्पना हम ऊपर करते हैं
और समझते देवों का वहाँ वास है
धरा पर करते मन की बातें
धन की लालसा में विश्वास है
प्रकृति के नियम जो टूटे
कभी नदियाँ कभी जंगल हमसे छूटे
अतिवर्षा कभी सूखा कभी भूकम्प
इसीलिये धरा पर विद्यमान हैं ।
करते प्रणाम उन लोगों को
जो हाथ बढाते तत्क्षण विपदा में
जिन्हें सचमुच मानवता का ध्यान है
होंगे पूज्य सदा सदा ही वो
ऐसे धरती पर जो भगवान हैं

कविता ..... चुपके से

डॉ. चंचल भसीन

"चुपके से"
तेरा यूँ चुपके से ज़िंदगी में आना
मुझे खिँझाना
मुझे रिझाना
मुझे खेलाना
मुझे सताना
मुझे मनाना
अच्छा लगता है।
माना ज़िंदगी तो पहले भी थी
सूखे पत्तों जैसे
हवा के
झोंकों से भी डरती
तिड़तिड़ करती
टूटती जुड़ती
बिखरती सँभलती
अब अच्छा लगता है।
अपने में तुझको पाती हूँ
रूह में ख़ुशबू तेरी
दिल में धड़कन तेरी
आँखों में इंतजारी तेरी
जुबां पे नाम तेरा
कानों में गूँजते बोल तेरे
अच्छा लगता है।

कविता .....माँ

ऋषिकेश सारस्वत 'साहित्य सुमन'
घोड़ासहन, पूर्वी चंपारण बिहार

माँ.....!
नाराज हूँ तुमसे
जन्म लेते हीं
मार क्यों नहीं दिया तूने...?
जब जानती थी !
मेरा कोई मूल्य नहीं
लोग
रौंद डालते है स्त्रियों को
ठीक उसी तरह
हाथी अपने मद में
रौंद डालता है फसलों को !
तुम भी तो स्वतंत्र नही
सिर्फ जीवन जी रही हो
घर में भी
अपने अस्तित्व से लड़ रही हो
इतना सब कुछ जानते हुए
मेरे बारे में क्यों नहीं सोचा तूने.?
मैं भी लड़की हूँ !
बड़ी बेरहमी से
इन दरिंदो ने
कुचला है मुझे
मुझे देखकर
अब जी सकोगी तुम.?
मैं भी तो नहीं जी सकुंगी
नहीं ! समाज नहीं जीने देगी
अरमान भी तो मर चुके है
जीकर अब क्या होगा..?

कविता ..... कटारड़ु

पवन चौहानसुंदर नगर
मण्डी (हि. प्र.)

सर्दी की गुनगुनी धूप में
छत पर लेटा मैं
देखता रहा बड़ी देर तक
आकाष
एकटक
बूढ़ी अम्मा को लपेटते
अपनी पींजी-अनपींजी रुई के
ढेरों फाहे

कटारड़ुओं के छोटे-छोटे झूंड
इधर से उधर
तेजी से उड़ते, मस्ती में खेलते
और बांधते रुई को गांठों में
अम्मा को देते सहारा

वे जानते हैं
काम खत्म होते ही
टिमटिमाते तारों
और खिलखिलाते चांद के बीच
अम्मा सुनाएगी उन्हे
कोई बढ़िया-सी कहानी
एक मीठी-सी लोरी
इसलिए तेजी से वे
समेट रहे थे रुई
बहेलिए को चकमा देते हुए

कविता ..... जी रहा हूँ

नवनीत कुमार सिंह
आजमगढ़ [यू.पी.]

फिर चुप!!
कभी-कभी ऐसा लगता है कि
मैं तुमसे नहीं
किसी मूर्ति से बात कर रहा हूँ।
तुम्हारी तरह मूर्ति भी
सब सुनती है,
और वह भी पलटकर जबाब नहीं देती।
तुम बन बैठे देव,
मूर्ति सा चुप रहकर,
लेकिन मैं कोई पत्थर नहीं,
जो समझ लू तेरे अनकहे जज्बात,
ना ही हूँ कोई योगी,
जो चढ़ाकर फूल तुझपे
करु गुणगान तेरा, दिन-रात।
अरे! मैं तो तेरा वो साधक हूँ,
जी रहा हूँ
सिर्फ एक ही लालसा लिए
कि मैं कुछ तुमसे कहूँ
और तुम भी पलटकर
उसका जबाब दो।

सन्नाटा

चले जाओं दूर मुझसे
मैं नहीं आने वाला पीछे तुम्हारे।
नफ़रत है तुम्हे सन्नाटो से
और मैं तो पसरा पड़ा हूँ
दुनिया के सन्नाटो में।
जुटा लो भीड़ आज
सारे जमाने की,
पर कैसे निकाल पाओगे
उस क्षण के बिखरे सन्नाटे को
जो छोड़ा है अमिट छाप, अन्नस ने
तुम्हारे अन्तःमन पर।

कविता ..... शहीद लड़कियां और तिरंगा

पुनीता सिंह
ज्योति नगर, दिल्ली

लड़कियों के लिए
समाज लगा लेता है
दोहरा चश्मा
घर में कुछ और
वाहर कुछ और।
उठातीं हैं बच्चियाँ
अपने नाज़ुक दिल पर
अपनों की छुपी
फितरत का बोझ ।
उनके पिता -भाई -चाचा
कभी-कभी
लड़तें हैं सीमा पर लड़ाई ,
वो लड़तीं हैं
हर पल एक लड़ाई
कभी अपने से
कभी अपनों से
कभी समाज से
कभी परिवार से-
जारी रहता है उनका
निरंतर,हर दिन
नए रूप में
एक नया युद्ध।
पल-पल मरतीं हैं उनकी इच्छाएं
दफ़न हो जाता हैं कब बचपन,
पचास डिग्री पर रसोई में
गोल-गोल रोटियां पकाते
पसीना पोंछतें -हांफ़तें-खांसते
घर से दफ्तर तक
बच्चों की परवरिश तक
उम्र की धूप उतरने लगती है सीढ़िया
लड़ते-लड़ते सो जातीं हैं
कभी ना जगने वाली
खामोशी भरी
सुहानी नींद में
फिर भी नहीं कहलातीं
वो शहीद
नही मिलता उन्हें कोई मेडल।
उनके शव पर होता नहीं तिरंगा
उनकी चिताओं पर
लगता नहीं मेला ॥

कविता ..... दिल किसे है प्यारा .....

प्रदीप यादव

दिल किसे है प्यारा , प्यारा अब यहाँ चाम है ,
बदसलुखी, बदतमीज़ी , अत्याचार हो गया अब यहाँ आम है !
रिस्ते नातो की तोड़ डोर, बैठ गया सर चढ़ अब यहाँ काम है,
ऊची दुकाँ फीके पकवान, रह गया बस अब यहाँ नाम है,
साधु संतो के भेष मे, शैतानो ने बना लिया अब यहाँ धाम है,
अपने तक सीमित हो गयी, सारी अब यहाँ आवाम है,
राजा हो या रंक ,किसे अब यहाँ आराम है ,
जमीर से ऊची हो गयी, इंसान की अब यहाँ इच्छा-ए-आयाम है ,
जहर उगलते सापों को "प्रदीप", दूर से ही अपनी राम-राम है !!

कविता .....कल की घटना और आज की कविता

मजहर मुदस्सिर

झड़ जाते है
पत्ते चिनार के
टूटकर बिखर जाते है
कितने ही ...
समय के प्रहार से
बच निकलते है कुछ
और कुछ
सूख के जला दिए जाते है
कोयले की खातिर
कांगड़ी के आग में
भरकर तप जाते है
कुछ के विचार
पिगल जाती है
कुछ की संवेदना.

बनाते है कितने
भाव- अभाव
कांगड़ी के तप से
जिस तप की तपन में
जलती है ...
कुछ की उंगलियाँ
कुछ के हाथ,
कुछ बुन डालते है
खामोश जलसे की मुस्कान
कभी धर्म को लेकर
कभी राजनीति को लेकर
कभी स्वार्थ को लेकर.

यह पत्ते भी
कभी हरे थे
हर एक फरेब और मक्कारी की
सिंचाई से परे,
कर जाते है
हर राही की राह शालीमार
हर आरोप की आग से लबरेज़
यह पत्ते करते है छाया
बिना किसी धर्म के अभाव के
बिना किसी कर्म के अभाव को
बिखर जाते है
बस तेरे इलज़ाम से
बस तेरे आरोप से.

2
लाली लाल है

मैंने हर राह को
शालों में दखा है
देखी है ...
माखल सी सफ़ेद चादर
पिघल रही है,
सुहारी हरी कालीन
जल रही है
चिनार की छाँव में
झुलस रहे है
फेरन पहने
कांगड़ी लिए
सिर पर कनटोप लगाए
एक निरीह कश्मीरी
राजनीति की आग में.

कभी आतंकवाद,
कभी अलगाववाद,
कभी सत्ता की आग में .

मुरझा गई है
केसरी कलियाँ
सेबों सी रंग सी
लाली लाल है
हर युवा में
हर गली में.

कविता ..... दोस्ती

संजय वर्मा "दृष्टी "
मनावर - जिला धार (म प्र)

दोस्ती का मतलब जिसने समझा सही
उसे दुनिया से कोई शिकवा नहीं
दोस्ती से बढ़कर दुनिया में कोई नहीं
वो क्या जानेंगे ,जिसने दोस्ती की ही
नहीं

आँखों ने की पलकों से दोस्ती
शब्दों ने की होठों से
साँसों ने की जब हवाओं से दोस्ती
जीने का मजा आने लगा
दोस्ती का मतलब .....

पाँवों ने की जमी से दोस्ती
घुंघरुओं ने की पाँवो से
संगीत ने की जब कानों से दोस्ती
सुनने का मजा आने लगा
दोस्ती का मतलब .....

आँखों ने की आइने से दोस्ती
श्रृंगार ने की चेहरे से
मन ने की जब तन से दोस्ती
सजने का मजा आने लगा
दोस्ती का मतलब .....

सुशीला शिवराण
गुडगाँव

कल शाम
विकल-सी
अनमनी-सी बारिश
उतरी अंबर से
लाई साथ
कुछ उलाहने
कुछ इल्ज़ाम
बोली कलम थाम
चाहती हूँ रिहाई
इन पुर्ज़ों की कैद से।

मत बाँधो मेरे हुस्न को
जुल्फ़ों पर गिरी बूँदों में
नहाई-झूमती फ़सलों
नम फूलों-कलियों की
पाकीज़ा खूबसूरती हूँ मैं
सौंधी मिट्टी की महक में
मोर की थिरकन में
नंग-धड़ंग बच्चों के हुड़दंग में
मैं तो उमंग हूँ
बेहिसाब मतवाली !

टिन की छत पर
बजती हूँ जलतरंग-सी
धड़कते दिलों को
मदहोश करता है
मेरा उन्मुक्त संगीत
भीगती अमराइयों में
कोयल की कुहक में
पपीहे की टेर में
सावन के गीतों में
कजरी-मल्हार में
रूह से उठती तान हूँ
कभी सुनो तो सही।

नाउम्मीद किसान की
पथराई आँखों में
उम्मीद हूँ ज़िंदगी की
मिट्टी में पड़े बीजों से
उगाती हूँ खुशियाँ
जो गाती हैं
सब से मीठे गीत !

फ़लक पर
बादलों के साथ
तमाम दुनिया के ख़्वाब
कर देती हूँ इन्द्रधनुषी
मेरी बूँदों से भीग उठती है धरा
जो बन जाती है दुआ
ज़िंदगी के लिए।

ख़ुदा का नूर हूँ
कागज़ पर नहीं
कायनात में हूँ
लफ़्ज़ों में नहीं
एहसासात में हूँ
इस सुरूर में
कभी बहो तो सही।

बोलती रही बारिश
भीगती रहीं आँखें
बारिश के साथ
बारिश के दर्द में
इन बारिशों को
कभी पढ़ो तो सही।

लघुकथा

सविता मिश्र
खंदारी-आगरा

" ये 'भगवान' आप सभी के साथ बहुत अन्याय कर रहें हैं | इसकी भरपाई तो नहीं कर सकतें हम , पर आप सभी को मुवावजा अवश्य दिलवाऊंगा |" नेता जी के उद्घोष पर तालियाँ 'गड़गड़ा' उठी |
एक बूढ़ा किसान दम साधे बैठा था |
"बाबा आप नहीं खुश हैं "
बेटा जब सबसे बड़ा न्यायाधीश ही अन्याय कर रहा हैं, इनके न्याय-अन्याय पर क्या ख़ुशी और क्या दुःख |
सांस जैसे यही बोलने के लिय अटकी थी |
तभी बादल फिर 'गड़गड़ा' उठा | दो चार किसान जो 'तिनका' पा खुश थे सहसा मिट्टी हो गये |...

२.कागज का टुकड़ा
मैं तुम्हारें बच्चे की माँ बनने वाली थी , पर तुम बेवफ़ा निकलें | भाग निकलें जिम्मेदारी के डर से |
आज मेरी नजर स्टेशन पर गाड़ी का इंतजार करते तुम पर पड़ गयी |
मैं भी अपने पति और बच्चों साथ जा रही थी मंसूरी घूमने |
जब तक खड़ी रही मन तब तक बेचैन रहा , दिल मिलने को बेताब हो उठा | सोचा कई बार मन में घुमड़ते बेवफाई के कारण रुकें काले बादल तुम पर ही जाके बरसा दूँ | तुम बह जाओं उस बहाव में, पर पति और बच्चों के कारण तुमसे नजर मिलाने की भी हिम्मत ना हुई |
कई महीने बाद ये लिखा पेपर पति के हाथों में देख , बहुत खुश हुई |
"कहाँ मिला ये कागज का टुकड़ा .."
जबाब में लंकाकाण्ड हो गया घर में | उस एक कागज के टुकडें ने दोनों के बीच पलें विश्वास के टुकड़े टुकड़े कर दिए | उसकी गृहस्थी उजड़ते उजड़ते बची | कितने एक्जाम्पल दिए ..प्रभा ने अपने साहित्य से दूर रहने वाले पति को |
उसी पल प्रभा ने कान पकड़ा कुछ भी लिखूंगी उप्पर लघुकथा, कहानी ,कविता पहले लिखूंगी फिर उसके आगे चाहे कुछ लिखूँ | ...

संध्या तिवारी

शहजादे सलीम की राजपूत पत्नी मान बाई शराब ने नशे में धुत्त शीशे के सामने खडी होकर कहती है ; "देखो शहजादे अब हमने शराब में तुम्हारा विकल्प ढूंढ ही लिया।"
नाटक खत्म ।
दर्शक दीर्घा में बैठी प्रिया भी अपने पति विपुल के साथ घर आ गई ।जल्दी सोना था उसे ।कल किटी जो थी ।उसने अभी अभी किटी ज्वाइन की थी ।पडोस की अनीता ने दवाव डाल कर प्रिया को किटी ज्वाइन कराई थी।किटी के तौर तरीकों से अन्जान प्रिया किटी में जाकर कुछ अलग थलग पड जाती ।

चमकते चेहरे ,वेस्टर्न आउट फिट्स ज्वैलरी ,कटे हुये करीने से सजे बाल ब्रान्डेड फुट बियर।सब-कुछ लक-दक।
और प्रिया साडी जूडे में खुद को उस समाज से कटा महसूस करती।
बेम्बू क्या होता है पिरामिड किसे कहते है कार्नर में तीनो लाइन के नम्बर कटेंगे या सिर्फ ऊपर नीचे के अंक जव तक वह समझ पाती गेम ओवर।
लेकिन पूरे साल उसे ये बात समझ नहीं आई कि ये इतनी पॉश औरते हौउजी गेम जीतने पर पच्चीस पच्चीस पचास पचास रुपये के लिये इतना शोर शराबा और हारने पर भाग्य को कोसती क्यों हैं ।

आज प्रिया को किटी देनी थी ।राय मशविरा करने वह अनीता के घर पहुंची, तो अनीता ने उसे देख तुरंत आंसू पोछते हुये मुस्कुराने का प्रयत्न किया।
"आओ आओ बैठो आज तो तुम्हारी किटी है न ।सारी तैय्यारियां हो गई ।"
"नही न, बही तो तुम से पूछने आई हूं । लेकिन तुम तो खुद ही परेशान हो।"
"नहीं , बस ऐसे ही ।"
"मुझे नहीं बताओगी ।बताओ न क्या हुआ? "
प्रिया की हमदर्दी की आँच पाकर अनीता के दुख का पहाड पिघलने लगा।
फट ही तो पडा था उसके मन का गुबार

" अरे ! ये हमारे हस्बैन्ड जो न करें सो थोडा है ।शराब क्या कम थी जो औरतों का भी शौक पाल लिया।रात रात भर घर नहीं आते ।ऑफिस को ही इन सबका अड्डा बना लिया है। "
उसकी भावनाओ का ज्वार जब कुछ मंद पडा तब कुछ रहस्यात्मक लहज़े में बोली ; " अरे ये ही क्या किटी की सारी औरतों के आदमियों का यही हाल है । कोई किसी फन में ,कोई किसी फन में।मैं तो कई सालों से इन सबको जानती हूं।
ये सब ऊपरी टीम टाम है खुद को भुलाये रखने के लिये ।वरना सब अन्दर से घुनी हुई हैं।
प्रिया के सामने मानो मानवाई उतर आई जो कह रही थी शहजादे हमने तुम्हारा विकल्प ढूंढ लिया।

गज़लें

अलका मिश्रा

(1)

के मौसम में कुछ नमी सी है
बर्फ़ रिश्तों में फिर जमी सी है
साथ सब हैं मगर बिना तेरे
सूनी महफ़िल है,कुछ कमी सी है
मैं फ़रिश्ता जिसे समझ बैठी
उसकी फ़ितरत भी आदमी सी है
जब से उसने कहा वो आएगा
जाने क्यों सांस ये थमी सी है
आज वो है मेरी पनाहों में
आज की रात शबनमी सी है

(2)

चाँद पाने का तराना छोड़ दो।
हमे अब तुम आज़माना छोड़ दो।
रूठ कर जाओगे बोलो तुम कहाँ,
दूर जाने का बहाना छोड़ दो।
दर्द आँखों से बयां हो जायेगा,
बेवजह यूं मुस्कुराना छोड़ दो।
बांटने बांटने को प्यार आये हम यहाँ,
नफरतों में खूं बहाना छोड़ दो।
बात बन जायेगी गर दिल की सुनो,
लोगों की बातों में आना छोड़ दो।
वंश बेटों का बढ़ा ना पाओगे,
अंश बेटी का मिटाना छोड़ दो।
ज़िंदगी यूं ही फिसलती जायेगी,
रेत की मुट्ठी बनाना छोड़ दो।

गज़लें

अवधेश कुमार जौहरी
भीलवाड़ा-राजस्थान

ग़ज़ल -1

कभी फुर्सत हो तो देखो, अपना गुज़रा ज़माना |
मुहब्बत की वो बातें, चिड़ियों का चहचहाना ||
ना थी कोई बंदिशें, ना हीं था कोई फ़साना |
मर्जी का ही था आना, मर्जी का ही था जाना ||
स्कूल की वो घन्टी , अंतहीन दोस्तों की बाते |
झूठे ही रूठ जाना , पर सच्चा था वो मनाना||
हर राह में थी कलीयां ,बागन था हर मुहल्ला |
शबनम के थे ये आँसू ,कलियों का मुस्कुराना ||
लगती थी चोट जब भी ,आती थी याद अम्मा |
वो मुस्कुराते रहना ,आँसूओं का भी छुपाना ||
अम्मा की प्यारी मूरत ,बाबूजी की वो सूरत |
आबाद जिसके दम से था ,मेरा वो आशियाना ||
आती नहीं है गोया क्यों, अब आँगन में भी मेरे |
बदली है क्यों फिजायें , बदला है क्यों ज़माना ||
जीवन बहुत है छोटा ,कुछ खो गया है इसमें |
सब खोजते है अब तो ,खुशियों का ही ठिकाना ||
ख़ुद खो गया है खोजी ,ये खोज भी गज़ब है |
चन्द कहकहों के खातिर,भटका कहाँ कहाँ ना ||

ग़ज़ल -2

यूँ ही बेसबब दिन-रात गुज़ारा मत कीजिये |
एहसान वक़्त का यूँ भी उतारा मत कीजिये ||
तुम्हारे ज़िगर से निकलेंगे फिर लहूँ के आँसू |
इस कदर भी किसी को निहारा मत कीजिये ||
यहाँ पिंजरे की हकीकत से वाकिफ है परिंदा |
किसी को भी दिखावे का सहारा मत कीजिये ||
अभी तो जाग रही है चिरागें भी उन राहों में |
सफरे प्यार में ख़ुद को आंवारा मत कीजिये ||
वक्त की उलझन सभी उलझनों से बड़ी होती है|
सिर्फ़ उलझे जुल्फों को संवारा मत कीजिये ||
हर अँधेरे के ज़हन में होते है उजाले का वज़ूद |
अहसान जुगनुओं का भी नकारा मत कीजिये||
हम तो मुसाफिर है हमारे नसीब में राहतें कैसी |
जो हो न सका कि सी का हमारा मत कीजिये ||
ज़माने वाले तो मुहब्बत को बदनाम कहते है |
कलम वाले ये गुनाह है दोबारा मत कीजिये ||

गज़ल .....

बैजनाथ शर्मा 'मिंटू'
अहमदाबाद (गुजरात)

मुझे सच को कभी भी झूठ बतलाना नहीं आता |
तभी तो मेरे घर भी यार नज़राना नहीं आता |
अगर तुम प्यार से कह दो लुटा दूँ जान भी अपनी,
मगर परछाइयों से मुझको टकराना नहीं आता|
तड़पकर भूख से मरना मुझे हर पल गवारा है,
मगर आगे किसी के हाथ फैलाना नहीं आता|
रूकावट लाख आई है अभी तक मेरे जीवन में,
मगर घबरा के पथ में मुझको रूक जाना नहीं आता |
तू कर दे सर कलम मेरा मगर है बेबसी मेरी,
मुझे दिन को कभी भी रात बतलाना नहीं आता|
अगर है शौक पीने का तो ख़ुद जाना तू मयखाने,
किसी के घर तलक चलकर ये मयखाना नहीं आता|

२.

अम्नो अमाँ भी आएगा हिन्दोस्तान में|
नेकी का ख्याल लाइए जेहनों जुबान में|
इंसानियत का खून बहाने की बात तो ,
लिखी कहीं न गीता में या फिर कुरआन में|
गुलशन में आग लगती न हर्गिज कभी मगर,
कुछ खोट है जरुर दिले बगाबान में.
मरघट बना दिया है सियासत ने मुल्क को,
अरमान दफ्न हो गए अपने मकान में|
लेकर तुझे भी डूबेगी गर ये बरस पड़ी,
काली घटायें उमड़ी है अब आसमान में|
दिल जीतने के वास्ते अब प्यार बाँटिये,
कोई तिलस्म अब नहीं तीरो-कमान में|

कहानी

कहानी ..... "गलती कहाँ हुई"

करुणा पांडये

झील में तैरती लाश को देख कर राज की आँखों से आंसूं निकलने लगे | उसने आँखें आसमान की तरफ की और कुछ बुदबुदाने लगा, उसकी आँखों से लगातार अश्रुधारा बह रही थी | उसकी हालत देख कर जय घबरा गया | उसने राज़ के कंधे पर हाथ रख कर थपथपाया और पूछा – "क्यों बॉस इतना भावुक क्यों हो गया है, तू तो हर दम मस्त रहता है, आज इस लाश में एसा क्या देखा कि तू परेशान हो गया | अरे यार, इस झील में तो रोज़ ही कोइ न कोइ लाश निकलती रहती है |"

राज़ ने आँखें उठाकर जय को देखा, उसकी आँखें लाल हो रहीं थी | आँखों से आँसू बह रहे थे | उसकी हालत देख कर जय घबरा गया | " अरे राज़ क्या हुआ मेरे दोस्त, तू इतना परेशान क्यों है ?"

"कुछ नहीं" राज़ ने बात टालते हुए कहा |

"नहीं कुछ बात तो है मेरे यार" जय उसका हाथ सहलाते हुए बोला – "सच कह क्या कुछ परेशानी है ?"

"जय तूने मेरे जीवन का एक ही पक्ष देखा है, अभी तूने मेरे जीवन का काला अध्याय नहीं पढ़ा है | वैसे मैं उसको याद करना भी नहीं चाहता |"

"राज़ क्या बात है, देख मैं तेरा दोस्त हूँ | हमारे बीच कुछ छिपाव नहीं होना चाहिए | तुझे मेरी कसम है सच सच बता क्या बात है | आज मैं सब कुछ जान कर ही रहूँगा |" जय ने राज़ के माथे को सहलाते हुए कहा |

राज़ आँखें पोछते हुए बोला –"मेरी जिन्दगी में बहुत उथल पुथल रही है | जीवन ने मेरे साथ बहुत क्रूर मजाक किया | मेरे दोस्त जय चल आज मैं तुझे उन सभी वाकयों को बताता हूँ जो आज भी तन्हाई में मेरे मन को उद्वेलित कर देते हैं | मेरे जीवन के शुरू के आठ साल एक राजकुमार की तरह व्यतीत हुए | हमारे पापा के पास बहुत पैसा नहीं था पर हम लोग बहुत सुखी और खुशहाल जीवन बिता रहे थे | माँ घर को सभालती थी | मेरा भाई छ: साल का था और मेरी बहन चार साल की थी मेरे पापा ने अपनी सामर्थ्य से बाहर जाकर हम तीनों भाई बहन का नाम एक अच्छे पब्लिक स्कूल में लिखाया | माँ पापा की तमन्ना थी कि हम अंग्रेजी माध्यम से पढ़े और बहुत बड़े अफसर बनें | चूँकि माँ पापा हिन्दी मीडियम स्कूलों से पढ़े थे और अच्छी अंग्रेजी नहीं बोल पाते थे इसलिए एक हीन ग्रन्थी उनके अन्दर थी | वह अपने बच्चों को इस हीन भावना से दूर रखना चाहते थे ,इसलिए हम तीनों का दाखिला एक अच्छे पब्लिक स्कूल में कराया गया |

हम लोगों की जिन्दगी सादगी और शान्ति से चल रही थी कि अचानक हम पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा | पापा की एक एक्सीडेंट में मृत्यु हो गयी और हमारी जिन्दगी में भूचाल आ गया | माँ और हम लोग टूट गए थे | दुःख को झेलते हुए , यादों में खोते हुए और आंसूओं को पीते हुए एक साल कैसे बीत गया – पता ही नहीं चला | माँ को हम भाई बहनों के भविष्य की चिंता थी और उसके लिए वह कुछ भी कुर्बानी करने को तैयार थी | दादा दादी की तरफ से न ही किसी तरह की सहायता मिली न ही उनमें प्यार या लगाव जैसी कोई भावना थी | धीरे – धीरे हमारे दादा दादी ने माँ को अलग होने के लिए दबाब डालना शुरू कर दिया | मेरी माँ के पास कोई बड़ी डिग्री नहीं थी , वह सिर्फ बी. ए. पास थी | एक तरफ पापा का दुःख दूसरी तरफ हम लोगों की परवरिश , माँ को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ? एक दिन माँ ने नानाजी से बात की | नाना नानी भी पराधीन थे | नानाजी बहुत बीमार थे और हर समय चारपाई पर पड़े रहते थे | नानीजी ही सारा काम करती थी , वह लोग किराये के एक कमरे के फ्लैट में रहते थे | मामा दिल्ली में नौकरी करते थे , वह भी एक कमरे के फ्लैट में रहते थे | नानाजी खुद ही मामा पर आश्रित थे तो क्या कहते | पर उन्होंने कह सुनकर एक स्कूल के एकाउन्ट सेक्शन में माँ की नौकरी लगा दी |

माँ ने एक छोटा सा कमरा किराये पर लिया और मैं अपने दोनों भाई बहन और माँ के साथ उस घर में रहने लगा | माँ घर का सारा काम करके स्कूल जाती ,वहां सारे दिन काम करके थककर घर आती और फिर काम में लग जाती | रात में मैंने कई बार माँ को रोते हुए देखा जय ,पर मैं समझ नहीं पाता कि क्या करूँ जिससे माँ सुखी हो | हम तीनों बच्चे अच्छे नम्बर लाने का प्रयास करते और लगभग हमेशा ही कक्षा में प्रथम आते इससे माँ को खुशी मिलती | रात में हम माँ के पैर दबाते , चुटकले सुनाते ,उनको हँसाते और भविष्य के सपने बुनते हुए , बातें करते हुए सो जाते | कभी कभी तो घर में खाने की भी कमी होती पर हम सब भूख नहीं है कहकर एक दूसरे को खाना दे देते थे | इस तरह से जीवन की गाड़ी किसी तरह खींच रहे थे पर माँ का जीवन शापित हो गया था | ऐसे मुश्किल समय में स्कूल के एम.डी. साहब का माँ को समझाना और समय – समय पर मदद करना माँ को सुकून देती थी | एम.डी.साहब से मित्रता होने के बाद माँ थोड़ा खुश रहने लगी थी ,अब वह अपने कपड़ों पर भी ध्यान देने लगी थी | हम भाई बहन खुश थे कि माँ अपने जीवन को एक आकार दे रही है और ठीक से जीने की कोशिश कर रही है | पर भगवान् ने तो कुछ अलग ही लिखा था | धीरे – धीरे माँ और एम.डी. साहब की नजदीकियाँ बढ़ने लगी और एम.डी.साहब की सहानुभूति मित्रता में बदल गयी और फिर मित्रता ने कब प्यार का रूप धारण कर लिया इसका

अहसास न माँ को हुआ और न ही हमको -| एम. डी. साहब की पत्नी मर गयी थी | माँ हमारे भविष्य के लिए चिंतित रहती थी ,वह पापा के सपने को पूरा करना चाहती थी ,पर उसके पास न पैसा था न ही सहारा -,माँ बहुत परेशान रहती थी | मुझे देखकर बहुत पीड़ा होती थी |समय अपनी गति से चल रहा था , हम जीवन से नूराकुश्ती करते हुए आगे बढ़ रहे थे |

एक दिन जब एम.डी. साहब ने माँ के सामने शादी का प्रस्ताव रखा तो माँ कुछ समझ न सकी पर प्रत्यक्ष में माँ ने मना कर दिया | पर एम.डी.साहब माँ के पीछे पड़े रहे और मना करने का कारण पूछते रहे | माँ क्या बताती ,पर बहुत पूछने पर माँ ने हम लोगों के भविष्य का हवाला दिया | इस पर एम.डी. साहब ने माँ को दिलासा दिया कि तुम्हारे बच्चे मेरे बच्चे हैं और उनका भविष्य वैसा ही बनेगा जैसा तुम चाहती हो |माँ के सामने असमंजस की स्थिति थी |

समय के थपेड़े खाकर मैं बहुत समझदार हो गया था | माँ स्कूल से आकर गुमसुम सी रहती थी | कई बार लगता था कि वह कुछ कहना चाह रही है पर कुछ कह नहीं पाती थी | माँ की चुप्पी हम सबको खलती थी पर हम समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें | एक दिन मैंने माँ को सोचो में गुम देखा तो पूछा –"माँ आप इतना गुमसुम क्यों रहती हैं , कोई परेशानी है तो मुझे बताइए | मैं अब समझदार हो गया हूँ | आपकी परेशानी दूर करूंगा |"

सुनकर माँ ने मुझे गले से लगा लिया | सिसकते हुए बोली –"बेटा इस दुनियाँ में मेरा तू ही तो एक हमराज़ है ,मेरे लाल मैं थक गयी हूँ | मुझे समझ नहीं आ रहा है कि क्या करूँ ? एक तरफ तुम्हारा भविष्य है पर दूसरी तरफ डरती हूँ कि कहीं भविष्य सुनहरा बनाने के लालच में तुम्हें खो न दूँ |" और माँ की आँखों से अविरल आंसूं बहने लगे |

मैंने कहा –"माँ तू ऐसा क्यों सोचती है ,हम तुझे क्यों छोड़ेगे ,अगर कोई परेशानी है तो मुझसे कह ,मैं सब ठीक कर दूंगा |"

"बेटा मैं आजकल एक द्वन्द्व से गुज़र रही हूँ | समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ | तुम लोगों से कहने की हिम्मत भी नहीं हो रही है ,पर राय लूँ तो किससे लूँ |"

"माँ आप जो भी कहना चाहती हैं मुझसे कह सकती हैं , आपको परेशान होने की जरुरत नहीं है ,और मन में कोई परेशानी हो तो कह देने से उसका कोई ना कोई समाधान जरूर निकलता है |"

माँ ने मुझे सीने से लगा लिया और पूछा –"बेटा , अगर मैं अपने स्कूल के एम.डी. साहब से शादी कर लूँ तो क्या तुम लोग नाराज़ तो नहीं होगे | उन्होंने मुझसे वादा किया है कि वह तुम लोगों के दाखिले अच्छे स्कूल में कराएँगे , तुम्हें अच्छी शिक्षा देंगें | हमको एक ठौर मिल जाएगा और तुम सबका भविष्य बन जायेगा | पर इसका तुम लोगों पर क्या असर होगा ,पता नहीं तुम लोग क्या सोचोगे ,मेरा कोई लालच नहीं है ,सिर्फ तुम लोगों का भविष्य ही मेरा लालच है | क्या करूँ ? अभी इतनी कम पगार है कि मैं शायद तुम लोगों को ज्यादा पढ़ा भी नहीं पाऊँ | बता मेरे बच्चे मैं क्या करूँ ?"

"माँ आपको जिसमें सुख मिले और जिससे तेरी परेशानी कम हो वह कर | हमें कोई समस्या नहीं है | तेरे हर निर्णय में हम तेरे साथ हैं |" मैंने कह तो दिया पर मन ही मन मैं रो रहा था क्योकिं मुझे एम.डी . साहब पर भरोसा नहीं था और माँ के छीन जाने का भी डर मन के किसी कोने में था | पर माँ का मैंने साथ दिया |

पर माँ के इस निर्णय को सुनकर स्वीटी और मोनू ने एतराज़ किया ,वह पापा की जगह किसी को भी देने को तैयार नहीं थे | माँ दुविधा में थी | मैंने स्वीटी और मोनू को वास्तविक स्थिति का भान कराया और भविष्य के सुनहरे सपने दिखाकर राजी किया | बहुत ऊंच – नीच बताने पर वह मान तो गए पर मन में उनके नाराजगी बैठ गयी थी | मैंने सोचा अभी ताज़ा घाव है ,धीरे – धीरे उज्जवल भविष्य मिलेगा तो गुस्सा शांत हो जाएगा |

फिर कुछ दिनों के बाद माँ ने एम्.डी. साहब से शादी कर ली | हम लोग अपनी कोठरी छोड़कर एम्.डी. साहब की कोठी में आ गए | हमें कोठी में बहुत अजनबीपन लगता था | हर समय डरे सहमे से रहते थे |न मन से हँसते थे न ढंग से कुछ खाते थे | हालांकि एम्. डी.साहब का व्यवहार बहुत प्यार भरा था , वह खूब अच्छे से बोलते थे | पर मुझे उसमें अपनत्व नहीं लगता था , हमारा मन यहाँ नहीं लग रहा था ,हमें अपनी कोठरी की खूब याद आती थी | मैं अन्दर से विचलित था पर प्रत्यक्ष में स्वीटी और मोनू को समझाता रहता था क्योंकि अब तो तीर हाथ से निकल गया था | पर माँ कुछ खुश सी रहने लगी थी | इससे मुझे सुकून मिलता था |

सबसे ज्यादा बुरा हमें माँ के साथ दूरियाँ होने पर लगता था | जो माँ पहले हम तीनों के आसपास रहती थी वही माँ अब हर समय एम्.डी.साहब के साथ लगी रहती थी और हमें समय नहीं दे पाती थी | हम तीनों की दुनियां अलग थी ,माँ और एम्.डी.साहब की दुनियां अलग थी | स्वीटी और मोनू के अन्दर विद्रोह पनपता जा रहा था वह अक्सर इन बातों पर गुस्सा होते थे पर मैं उनको समझाता था | पर अब हमें अच्छा खाना और कपड़ा मिल रहा था | मैं अपने भाई बहन को संभालता और बुजुर्ग की तरह उनका ख्याल रखता था |

दो साल तक सब ठीक चला | अब हम घर में थोडा अच्छा महसूस करने लगे थे | एम्.डी.साहब से कोइ ख़ास बात नहीं होती थी पर सामने पड़ जाते थे तो पढाई के विषय में पूंछ लेते थे या कहते थे कोई परेशानी हो तो बताना ,इसे अपना ही घर समझो बच्चों | यह बात हमारे दिल को छलनी कर देती थी , उनका अपनापन ही हमें परायेपन का बोध करा देता था , पर हम लोग संक्षिप्त सा उत्तर दे देते थे | हमारा कमरा अलग मन्जिल पर था और हमारा उद्देश्य पढ़कर पापा के सपने को पूरा करना था | हमको अच्छे स्कूल में डालकर उसका खर्चा वह उठा रहे थे इसलिए हम उनके प्रति शुक्रगुजार थे | पर दो साल बाद माँ और एम्.डी.साहब के बीच किसी बात को लेकर रोज़ कहासुनी होने लगी | माँ अकेले में बहुत रोती थी | कई बार मेरे मन में आया की मैं माँ से पूंछू पर मैं चुप रहता | पर जब एम्.डी.साहब ने हमारा तीनों का दाखिला हिन्दी मीडियम के सरकारी स्कूल में करवा दिया तो मुझे माँ के आंसू का कारण समझमें आने लगा | मैं तो चुप रहा पर मेरे भाई बहन ने इसका प्रतिवाद किया | एम्.डी.साहब ने हमें हिकारत भरी नज़रों से देखा ,पर कुछ नहीं कहा | पर माँ को बहुत कुछ कहा और काम के सिलसिले में मद्रास चले गए | माँ उस रात खूब रोई |

मैं भी जगा था | जब पानी लेने नीचे गया तो माँ को मंदिर के सामने बिलख

– बिलख कर रोते देखा | मेरे भी आंसू निकल गए मैंने माँ को उठाया आंसू पोछे और रोने का कारण पूछा | हाकाकी मैं माँ के रोने का कारण जानता था | माँ ने मुझे सीने से लगाया और कहा –"बेटा, मैं आज सब कुछ हार गयी तुम्हारे जिस भविष्य के लिए मैंने कुर्बानी दी वह बेकार गयी | मुझे माफ़ कर देना बेटा | काश मैंने एम्. डी,साहब के सज्जनता के ओढ़े मुखौटे के पीछे झाँका होता | मैं क्या करूँ ,मैं अब न मरने में हूँ न जीने में हूँ मेरे बच्चे | तू तो मेरा हमराज़ रहा है, बता मेरे से कहाँ गलती हुई |"

मैंने माँ के आंसू पोछे और कहा –"माँ तूने कुछ गलत नहीं किया | तूने जो किया हमारी भलाई के लिए किया | पर जब हमारा भाग्य ही खोटा है तो तू क्या ,भगवान् भी कुछ नहीं कर सकता ,और माँ क्यों फिकर करती है हम हिन्दी मीडियम से पढ़कर ही आगे बढ़ेंगे , बस तू अपना आशीर्वाद हमें देती रहना |" और जय उस सारी रात हम दोनों माँ बेटे एक दूसरे के आँसू पोछते रहे और एक दूसरे को दिलासा देते रहे |

मैंने देखा उस दिन के बाद से माँ तटस्थ सी हो गयी थी | शायद माँ और एम्. डी.साहब के रिश्तों की गर्माहट कम हो गयी थी |पर मैं अपने भाई बहन के साथ ही माँ का विशेष ध्यान रखता था | मेरे भाई बहन माँ की मजबूरी और भावना नहीं समझ पा रहे थे इसलिए वह माँ को माफ़ नहीं कर पाए | उनके मन में नफरत समय के साथ बढ़ती जा रही थी |माँ उनसे बात करने की कोशिश करती तो पढाई का बहाना करके चले जाते | माँ की हालत बहुत दयनीय थी | एक मैं ही था जिसके सामने माँ यदा कदा रो लेती थी |

अब एम्.डी.साहब अक्सर मद्रास टूर पर जाने लगे थे | उस समय माँ मुझसे बात करके नार्मल हो जाती थी | समय के थपेड़ों के साथ मैं बहुत मच्योर हो गया था | मेरा इन्टर का जब परिणाम आया तो मैंने यू.पी.में टॉप किया था | मेरा फोटो अखबार में आया | माँ ने खूब मिठाई बाँटी और उस दिन पहली बार मैंने माँ को ही के आँसू बहाते देखा | हम चरों बहुत खुश थे | एम्.डी.साहब मद्रास गए थे | तीसरे दिन जब वह लौटकर आये तो माँ ने बहुत ही खुश होकर मेरे टॉप करने की बात उन्हें बताई

उनहोंने कहा –"देख ले अगर मैं तुम्हें मदद नहीं करता ,उनको नहीं पढ़ाता ,अपनी कोठी में नहीं रखता , तो बिना सुविधाओं के राज़ टॉप करना तो दूर ,पास भी नहीं हो पाता समझीं –और अन्दर चले गए | माँ की आँखों से आँसू बहने लगे | मैंने इंजीनियरिंग की परीक्षा दी थी और मेरा प्रवेश रुड़की कालेज में हो गया | मैं होस्टल चला गया | रुड़की में मैंने दो ट्यूशन कर लिए जिससे कुछ पैसा एकत्र कर सकूँ | मेरी फीस टॉप करने के कारण माफ़ कर दी गयी थी |

मेरे घर से जाते ही माँ अकेली हो गयी | मेरे भाई बहन भी अकेले हो गए थे | माँ और भाई बहन के बीच मैं एक सेतु था | सेतु हट जाने से उनके बीच और गहरी खाई हो गयी |अब बहन और भाई माँ को यदा कदा कड़वी बातें बोलने लगे थे | इस तरह फोन से चिट्ठी से माँ और भाई बहन के बीच्की दूरी को पाटने का प्रयास करते हुए मैं इन्जीनियर बना और गुडगाँव में मेरा प्लेसमेंट हुआ | इसी बीच मेरा भाई भी इंजीनियरिंग करने मेरठ चला गया | अब बहन वहां अकेली रह गयी |माँ जितना उसके पास जाने की कोशिश करती वह उतना ही उससे दूर होती चली गयी | धीरे – धीरे बहन अवसाद ग्रस्त रहने लगी | एम्.डी.बहन की शादी के लिए जोर दे रहा था पर माँ उसे पढ़ाना चाहती थी ,अपने पैरों पर खडी करना चाहती थी | इन बातों को सुनकर बहन और भी अपसेट हो जाती थी | उसे अपना जीवन एक कैदी की तरह लगता था | माँ ने मुझे पहले कुछ नहीं बताया पर एक दिन बहन ने घर में बहुत उत्पात मचाया और एम्.डी.साहब ने बहन को लेकर बुरा भला कहा तो माँ ने मुझे सब बताया |मेरे पास न ज्यादा पैसा था न ज्यादा छुट्टी ,पर बहन की खातिर मैं घर गया तो देखकर मेरे होश उड़ गए | माँ अपनी उम्र से बीस साल ज्यादा नज़र आ रही थी और बहन भी बहुत कमज़ोर हो गयी थी | मैं उसे डाक्टर के पास ले गया | डाक्टर ने कहा की आपकी बहन का हिमोग्लोबिन बहुत कम है और ये डिप्रेशन की शिकार हैं | इनको अच्छा खाना ,अच्छा वातावरण , और दवाइयाँ देते रहें | हमेशा खुश रखें वर्ना इनकी बीमारी बढ़ती जायेगी और इन से प्यार से पेश आइये वर्ना ये कुछ भी कर सकती हैं |

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ,कैसे इसको सुखी रखूँ ? मैं अपनी बहन को अपने साथ ले जाना छह रहा था पर गुडगाँव में अपने एक दोस्त के साथ रहता था | मैंने अपनी बहन से कहा कि मैं जाकर एक फ्लैट ले लेता हूँ ,तू मेरे साथ रह , मेरा भी साथ हो जायेगा और तेरी पढाई भी ठीक से हो सकेगी | वह मान गयी | उसे समझकर और हिदायते देकर मैं वापस आ गया | गुडगाँव आकर मैं फ्लैट के लिए भागदौड़ करने लगा ,पर हर फ्लैट वाले दो महीने का एडवान्स किराया मांगते थे जो मेरे पास नहीं था | यह समस्या मैंने अपने कंपनी के मालिक को बताई तो उनहोंने मुझे एडवांस देने का आश्वासन दिया | अब मैं किराये के फ्लैट की तलाश करने लगा |

अकेलेपन से ऊबकर मेरी बहन की दोस्ती मोहल्ले के एक आवारा किस्म के लड़के से हो गयी | माँ जितना उस लड़के से दूर रहने को कहती , बहन उतना ही उससे मिलती | माँ को चिढ़ाने में बहन को मज़ा आता था | एक दिन माँ ने हिम्मत करके बहन से कहा –"स्वीटी बेटा तू मुझसे नाराज़ क्यों है ? आज मुझे बता दे मेरी गलती क्या है , मैं तूझे बहुत प्यार करती हूँ बेटा"

सुनते ही मेरी बहन फुफकारते हुए बोली –"आप सिर्फ अपने से ही प्यार करती हैं , किसी से प्यार नहीं करती | मैं आपसे क्यों नाराज़ हूँ जानना चाहती हैं आप –आपने हमारा बचपन छीना ,हमारे अभावों को दूर करने का झूठा नाटक करके आपने हमारे भावों से भरे घर को तहस नहस कर दिया , अपनी एय्याशी के लिए एम्. डी.साहब से शादी करके आपने हमसे हमारी माँ छीन ली – हम न गरीब रहे न अमीर रहे , अरे हम तो अनाथ हो गए | हमारा भविष्य बनाने के नाम पर आपने हमारा बचपन ,हमारा वर्तमान छीन लिया | आपकी गलती है कि आप गरीबी से घबराकर , मेहनत से भागकर इस एम्. डी. की पत्नी बन गईं, अरे इस दो कौड़ी के हिन्दी मीडियम सरकारी स्कूल में तो आप बिना शादी के भी पढ़ा सकती थीं | पर आपको तो अपने शौक पूरे करने थे | यह सोचकर कि आपने हमें जन्म दिया है –हमें शर्म आती है ,और वह भागकर अपने कमरे में चली गयी |

यह सुनकर माँ सकते में आ गयी | माँ को अपनी गलती का अहसास हुआ

,साथ ही उसने बच्चों की मानसिक यंत्रणा को भी महसूस किया | पर परिस्थितियों ने माँ को ऐसे दलदल में फँसा दिया था कि माँ सिर्फ आंसू बहाकर अफ़सोस ही कर सकती थी | एम्.डी. साहब दो दिन बाद मद्रास से आये तो उनके एक रिश्ता भी आया | किसी की पत्नी मर गयी थी दो छोटे बच्चे थे बिना पैसों के वह शादी करने को वह तैयार था इसलिए स्वीटी का रिश्ता वह पक्का कर आये थे | स्वीटी ने सुना तो उधम मचा दिया और उसी रात स्वीटी उस लड़के के साथ भाग गयी | माँ की टी बहुत ही खराब थी | वह एक ऐसे चक्रव्यूह में फंस गयी थी कि उन्हें निकलने का कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था | माँ ने जब मुझे बताया तो मैं तुरंत घर आ गया , मैंने माँ को सान्त्वना दी ,पर मन मेरा रो रहा था मैं बहुत परेशां था मुझे स्वीटी की फ़िक्र हो रही थी |पर माँ को समझाते हुए कहा –"माँ तू परेशान मत हो ,हो सकता है हमारी स्वीटी का जीवन संवर जाए | वह लड़का सच में स्वीटी से प्यार करता हो | माँ और हम स्वीटी को सुखी रहने का आशीर्वाद दे रहे थे | भगवान् उसे सारी खुशी देना चाहें हमें कितने दुःख दे देना | मेरी दुसरे दिन ट्रेन थी सारी रात माँ और हम भगवन का नाम लेते रहे | सुबहदस बजे एक पोलिस वाला आया और एक फोटो दिखाकर बोला कि क्या आप इसे जानते हैं ? अरे यह तो हमारे स्वीटी है , मेरी बहन है , यह कहाँ है ? इनकी लाश हमें नदी के किनारे मिली है ,साथ में एक सोसाइड नोट भी है जो सभाल कर प्लास्टिक की थैली में रखा है | आपको पोलिस स्टेशन आकर सारी कार्यवाही करके लाश मिलेगी |माँ बिलख – बिलख कर रोने लगी | मुझे न रोना आया न आंसूं बहे | मैं यंत्रवत उठा और चल दिया | लाश लाया और उसी समय क्रिया –कर्म कर दिया | बहन के जाने की बात सुनकर भाई भी आ गया था | माँ भाई और मैं तीनों ही अपने विचारों की दुनियां में मौन धारण किये थे | न हमने किसी को सान्त्वना दी न आंसू बहाए | सब काम यंत्रवत चल रहे थे | शायद दुःख में आदमी ऊपर तक डूब जाता है तो उसके अहसास ख़त्म हो जाते हैं | तीसरे दिन मुझे जाना था | सब सामान के साथ सुसाइड नोट भी मैं माँ को देने लगा तो उसे खोलकर पढने लगा | उसमें लिखा था

-- "विधाता ने मेरे पिता को छीना ,एम्.डी.ने मेरी माँ को छीना , पढ़ाई ने मेरे भाईयों को छीना , एक अस्मत मेरे पास थी –भावनाओं से खेलकर किसी ने उसे भी मुझसे छीन लिया | अब मेरे पास कुछ नहीं है , दुःख इतना सह लिया कि अब सुख का अहसास करने की भावना और इच्छा ही नहीं है | अब घुट – घुट कर जीने का हौसला ख़त्म हो गया है | मेरी मौत की जिम्मेदार मैं खुद हूँ | वैसे भी रोज़ –रोज़ मरकर मैं जी रही थी ,अब सुकून से मर रही हूँ | मेरे भाईयों को दुःख होगा,पर समय सबके घाव भर देता है |

अलविदा

-------- स्वीटी

पत्र पढ़कर हम तीनों ही फफक फफककर रो पड़े | जो आंसू और भावनाएं कहीं दब गयी थी स्वीटी के शब्दों से वह बाहर को उबल पड़ी | हम तीनों ही एक दूसरे के हाथ सहलाते रहे मगर शब्द शायद गूंगे हो गए थे | अगले दिन मेरी ट्रेन थी | शाम को भाई मेरठ लौट गया | जाते समय मैंने एक बुजुर्ग की तरह उसे समझाया और कहा –"कोई परेशानी हो तो मुझसे कहना" वह गुमसुम सा था | ठीक है भाई , तेरे सिवा अब कौन है मेरा इस दुनियां में , तुम भी अपना ध्यान रखना |" और आंसू छिपाते वह चला गया | उसने माँ से एक भी शब्द नहीं कहा | उसके जाते ही माँ फफक फफककर रो पड़ी | मुझे अपने से ज्यादा माँ की वेदना पर दुःख हुआ | मैंने कहा – माँ बहुत हो गया | मैंने वहां फ्लैट स्वीटी के कारन लिया था | अब स्वीटी तो है नहीं | तुम मेरे साथ चलो | यहाँ रहोगी तो स्वीटी का दुःख तुम्हें हर समय सालता रहेगा | वहां मेरा भी साथ हो जायेगा |"

माँ ने मेरा सर सहलाया और बोली –"बेटा मैं तेरे साथ जरूर चलूंगी | अबकी बार एम्.डी.को सब सौप दूंगी फिर निश्चिन्त होकर तेरे साथ चलूंगी , मेरा तेरे सिवा और है ही कौन बेटा – बस थोड़ी सी मोहलत दे दे मेरे लाल |"और माँ ने मुझे गले से लगा लिया | एक बार फिर हमारे आंसू एक दुसरे से होड़ लेने लगे | मैंने माँ को समझाया और खुद अपने हाथ से चाय बनाकर पिलाई | खाना खाने का हमारा मन नहीं हुआ | उस दिन माँ मेरे साथ हमारे कमरे में सोई थी | एम्.डी.देर रात को आये और अपने कमरे में सो गए |

समय बीतने लगा | मैं रोज़ एक बार माँ को और एक बार भाई को फोन से बात कर लेता था | जब भी माँ से कहता माँ तू तैयार रह मैं तूझे लेने आ रहा हूँ ,माँ कहती थोड़ी मोहलत दे दे | इस तरह एक महिना बीत गया | फ्लैट में अकेले रहना मेरे लिए मुश्किल हो रहा था | दिन तो आफिस में कट जाता पर रात काटनी मुश्किल होती थी | मैं अपने अतीत को लेकर वर्तमान तक के सुख दुःख और गलतियों की चटाई बुनता रहता | मुझे आज तक समझ नहीं आया कि गलती किससे और कहाँ हुई | माँ ने जो किया हमारी भलाई को ध्यान में रखकर ही किया था | तो फिर कमी कहाँ रह गयी | शायद गलती तकदीर लिखने वाले भगवान् से हुई होगी | समय का काम है चलना ,वह चलता रहा |

एक दिन एम्.डी.का फोन आया कि तुम्हारी माँ की तबीयत बहुत खराब है ,तुरंत आ जाओ | सुनकर बहदवास सा मैं घर पहुंचा | बिना आरक्षण के ट्रेन बदल कर लुटता पिटता जब मैं घर पहुंचा तो माँ शायद अंतिम साँसे गिन रही थी | उनहोंने मेरे सर पर हाथ रखा | मेरा भाई भी पहुँच चूका था माँ ने उसे बुलाया पर वह इन आया | मैं ही समझाकर जबरदस्ती उसे माँ के पास ले गया | माँ ने उसके सिर पर लाड़ से सहलाया तो मेरा भाई फफककर रो पड़ा | माँ के आँसू भी बहने लगे | शायद माँ की ममता भरे हाथ का स्पर्श होते ही भाई के मन से नफरत के बादल छंट गए थे | काफी देर तक दोनों एक दूसरे को सहलाते रहे | एम्.डी. अपने काम से बाहर चले गए | हम तीनों ही वहां थे | हमारे बीच शब्द तो मौन हो गए थे , बस आंसू और स्पर्श ही पुल का काम कर रहे थे | माँ और मोनू ने एक दूसरे से शिकायत का पुलिंदा जैसे ही खोला , मैंने कहा अब पुरानी बातों को भूलकर नए सिरे से जिन्दगी शुरू करेंगे | हम लोग चार बजे तक यूँ ही बातें करते रहे | मैं माँ से पूछता रहा तूझे क्या हुआ ? मैं डाक्टर को बुलाने जाता तो माँ कसम देकर रोक लेती | माँ ने कहा अब तुम दोंनो मेरे पास ही लेट जाओ , मुझे भी नींद आ रही है | हम दोनों माँ के पास लेट गए | हमें नींद आ गयी | छ: बजे के करीब मैं उठा तो देखा माँ के मुंह से झाग आ रहा है | मैं माँ को हिलाया उठाया पर माँ कुछ न बोली | "माँ , मैं जोर से चिल्लाया | चीख सुनकर

एम्.डी. कमरे में आये | उनहोंने माँ को हिलाया | फिर कहा – "अब तुम्हारी माँ इस दुनियां में नहीं हैं राज़"

सुनकर हम दोंनो भाई विशवास नहीं कर सके | पर माँ हमें छोड़कर अनंत में विलीन हो चुकी थीं | उसके चेहरे पर एक सुकून सा दिखाई दे रहा था | एम्. डी.ने जल्दी जल्दी माँ का अंतिम संस्कार कर दिया और तीसरे दिन ही सब कुछ ख़त्म करके शुद्धी हवन कर दिया | अब हमारा वहां रुकना बेमानी था | हम लोग जब वापस आने लगे तो एम्.डी. ने माँ का वह सामान जिसे पहन कर माँ उसके घर आई थी – दो चूड़ी ,सारी ,गणेशजी ,और दो चार किताबें लाकर हमें दे दी | मैंने माँ के उन अवशेषों को बटोरा और वापस आ गया |

गुडगाँव पहुँचने पर तीसरे दिन डाक से एक लिफाफा मिला | यह माँ का पत्र था | मैंने झट उसे खोला और उसे पढ़ने लगा |

प्रिय राज़ , ... मेरी जिन्दगी रोज़ ही कोइ ना कोई गुल खिलाती रहती है | स्वीटी की मौत से ज्यादा उसकी और मोनू की नफरत ने मुझे तोड़ दिया है | इस नफरत के साथ मैं अब और जी नहीं पाऊँगी | मुझे लगता है कि मेरी ज़रूरत किसी को नहीं है | अब इस दुनियां में मैं एक भार हूँ | एम्.डी.ने भी मद्रास में एक नई दुनियां बसा ली है ,जो एक झूठा भ्रम था वह भी टूट गया | तुमको छोड़कर जाने का मन नहीं कर रहा है पर अगर मैं यहाँ रही तो मेरी बदनसीबी तुम्हे भी डस लेगी | आने वाले समय में मैं एक ऐसा बोझ बन जाऊँगी जिसके नीचे मेरे अपने दब जायेंगें ,इसलिए मैं खुदकुशी कर रही हूँ | जब ये पत्र तुम्हें मिलेगा मैं इस दुनियां से जा चूकी होंगी | जब जीने की तमन्ना न हो तो जीना बेमानी हो जाता है | भगवान् से यही यही प्रार्थना है कि हर जन्म तुम ही मेरे बेटे बनना | आज मैं सब कुछ छोड़कर तुम्हारे पापा के पास जा रही हूँ | उन्हें तुम लोगों की उन्नति के बारे में बताऊँगी | मोनू का ध्यान रखना बेटा | वह मेरे से नाराज़ है ,पर सच मानो मैंने एम्.डी.का सहारा सिर्फ तुम लोगों के भविष्य को बनाने के लिए लिया था | वर्ना तुमको क्या पता कि एम्.डी.ने मुझ पर क्या –क्या जुल्म किये थे | एम्.डी.ने मुझसे शादी सिर्फ सामाजिक प्रतिष्ठा पाने , अपनी वाहवाही लेने ,और घर की देखभाल के लिए की थी | वह एक सैडिस्ट है | दूसरों को कष्ट देने में उसे मज़ा आता है | पहले ही दिन से उसने मुझे प्रताड़ित करना शुरू कर दिया था | उसके दिए कष्टों को मैं किसी के सामने कह भी नहीं सकती थी | मैंने सब सहा कि बच्चों का भविष्य बाब जाएगा पर मैं सब कुछ हारकर भी तुम लोगों का भविष्य नहीं सवांर पाई | मेरी गलतियों की वजह से मेरी बेटी मेरे दूर हुई और अपनी जिन्दगी नहीं जी पाई | पर समझ नहीं आता मेरे से गलती कहाँ और क्यों हुई | मुझे पता है कि मेरी भूल माफी के लायक नहीं है पर अगर हो सके तो मुझे माफ़ करना मेरे लाल | भगवान् तुम दोंनो को खश और सुखी रखे | भावावेश में कोइ कदम मत उठाना ,तुम्हें कसम है बेटा | आशीर्वाद के साथ ....तुम्हारी बदनसीब माँ |

पत्र पढ़कर मैं चेतना शून्य सा हो गया | मैं सोचता था कि शादी करके माँ को कुछ खुशी सी मिल गयी है | इसलिए मैं न चाहकर भी माँ की शादी को सपोर्ट करता रहा | पर उस दिन लगा कि माँ शादी करके भी काँटों की सेज पर सोती रही | माँ कितना कुछ सहती रही हम लोगों की खातिर – पर हम उसके त्याग को समझ न सके | "कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति" (पुत्र कुपुत्र हो जाता है पर माता कुमाता नहीं होती) इसका सही अर्थ मैंने उस दिन जाना | अब फ्लैट में रहना मेरे लिए बहुत कठिन था | मैंने पैसे की परवाह नहीं की और दोस्तों के साथ रहने लगा , जिनके साथ पहले रहता था | जीवन तो चलता है ,चल रहा है – पर एक रिक्तता के साथ | वहीं तुमसे मुलाकात हुई | तुम बहुत भावुक हो शायद इसीलिये तुमसे जुड़ाव हो चला गया | जय यह मेरे जीवन का वह अध्याय है जिसे न तो मैं भूल पाता हूँ और न ही याद करना चाहता हूँ |

"तुम्हारा भाई कहाँ है राज़"

मेरे भाई को कनाडा में नौकरी मिली और वह वहीं बस गया है ,|साल में एक बार आता है एक महीने के लिए ,तो हम लोग साथ रहते हैं | अब पुराने बात करने का न तो कोई मतलब है और न ही मन करता है | नया कुछ नहीं है , बस प्रकृति में ही लीन रहते हैं | वह कई बार कनाडा आने के लिए कह चुका है , पर अभी जाने की कोई इच्छा नहीं हो रही है | जाऊँगा एक बार ज़रूर जाऊंगा पर कब –कह नहीं सकता |

"देख राज़ इस तरह अतीत को याद करके तू कुछ नहीं कर पायेगा | अतीत को तू खूँटी पर टांगकर अब भविष्य के सपने बुन"

"जय यही कोशिश कर रहा हूँ पर अतीत को भूलना क्या इतना आसान है | यार अतीत के खूँटे से हमारा वर्तमान जुड़ा होता है और वर्तमान से भविष्य – इसलिए इन तीनों को अलग करके हम नहीं देख सकते | जब कभी किसी लाश और खास तौर से तैरती लाश को देखता हूँ तो स्वीटी याद आती है | मेरी मासूम बहन –कितना कष्ट हुआ होगा उसे अपनी जान देते वक्त , और मैं ऐसा भाई कि उसके लिए कुछ नहीं कर पाया" कहते कहते राज़ फूट – फूट कर रोने लगा | आज भी जय मैं यही सोचता हूँ की गलती कहाँ हुई ?"

जय उसे उठाकर अन्दर ले गया | पानी पिलाया और कहा –"देख राज़ आज से तू वही करेगा मैं जो कहूँगा | समझा तू |"

"ठीक है जय"

"तो जल्दी से आंसू पोछों और चाय पियो | साथ ही एक गुड –गुड वाली इस्माइल दो मेरे यार ,अरे ऐसे नहीं अ अ अ ... अब आई मेरी वाली हँसी | कीप इट अप .... राज़ अब यह दुःख सिर्फ तेरा ही दुःख नहीं है , इसे साझा करने वाला मैं हूँ तेरा दोस्त" जय ने कहा और उसे गले से लगा लिया |

आलेख

आलेख - मुद्राराक्षस की अप्रकाशित 'अज्ञेय चालीसा' (प्रयोगवाद और अज्ञेय की निर्मम आलोचना)

संदीप कुमार सिंह
लखनऊ

वक्तव्य:-

"मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि मेरे प्रिय मित्र चि॰ संदीप ने मेरी इस अत्यन्त जर्जर रचना 'अज्ञेय चालीसा' को मेरी आलमारियों में रखी रद्दी के बीच से खोज निकाला है। रचना के पन्ने पर जमी गहरी धूल की पर्त को इन्होनें जब अपनी सफेद रूमाल से पोंछकर मुझे थमाया तो मुझे इनकी उत्सुकता, लगन और परिश्रम को देखकर काफी आश्चर्य हुआ और भावुकतावश कुछ देर मैं स्तब्ध रहा। मेरी स्तब्धता के क्षण में मुझे वे दिन रील की तरह याद आ रहे थे जिन दिनों मैंने यह रचना लिखी थी। मेरी ऐसी ही साहित्यिक हरकत ने ही एक दिन मुझे सुभाष से मुद्राराक्षस बना दिया। आज जब यह रचना मिल ही गयी है तो उसे छपाना अपने मित्र के मान को रखने की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गयी है इसीलिए मैं अपने इस वक्तव्य के साथ प्रस्तुत आलेख को प्रकाशनार्थ अपनी स्वीकृति देता हूँ।"

(मुद्राराक्षस)
05 सितम्बर, 2013, शायं 4 बजे

हिन्दी साहित्य के एंटीएग्रीमैन के रूप में ख्यात आदरणीय मुद्रा जी का प्रस्तुत आलेख पर दिया गया वक्तव्य और स्वीकृति मेरे किसी पुरस्कार से कम नहीं है। बात काफी पुरानी है लगभग तीन-चार साल पहले मेरी पहली भेंट मुद्रा जी से अखिल भारतीय आयोजन 'कथाक्रम' में हुई थी। यह बात दीगर है कि ऐसे बड़े आयोजनों में तो व्यस्तता अधिक बढ़ ही जाती है अगर व्यक्ति आयोजन मण्डल में हो तो और भी। उस समय मैं मुद्रा जी को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था केवल भारतेन्दु के अनूदित नाटक और विशाखदत्त के संस्कृत नाटक 'मुद्राराक्षस' का नाम स्मरण था लेकिन उच्च शिक्षा हेतु लखनऊ प्रवास के दौरान जब साहित्यिक गोष्ठियों, विचारों सभाओं, पुस्तकालयों एवं साहित्यकारों के बीच जाने का अवसर धीरे-धीरे मिला तो अचानक एक दिन मुझे किसी साहित्यिक विचार सभा या गोष्ठी में मुद्राराक्षस का नाम सुनने का संयोग प्राप्त हुआ। यह नाम सुनकर मैं चौकन्ना रह गया और ध्यान लगाकर सुनने लगा। जब वक्तव्य खत्म हुआ तो डरते-डरते उन्हीं साहित्यकारों में से किसी से पूँछा कि आप लोग किस मुद्राराक्षस की चर्चा कर रहे थे भारतेन्दु के नाटक या संस्कृत नाटक की तो इस बात पर साहित्यकार महोदय ने हँसते हुए कहा अरे नहीं भाई लखनऊ में एक साहित्यकार हैं उनकी चर्चा हो रही थी और उनका नाम ही मुद्राराक्षस है। यह नाम सुनकर निरंतर मेरी उत्सुकता बनी रही जो पहली बार 'कथाक्रम' के आयोजन में उनसे मिलकर पूरी हुई और तभी से मेरी मुलाकातें निरंतर आदरणीय मुद्रा जी से हो जाया करती हैं। मुद्राराक्षस और उनकी पत्नी श्रीमती इन्दिरा देवी का वात्सल्यभाव तथा उनके पुत्र रोमी शिराज और रोमिल का भातृभाव मुझे उनके दरवाजे तक हफ्ते में दो-तीन बार खींच ही ले जाता है। आदरणीया माता जी (इन्दिरा देवी) द्वारा बनायी गयी चाय की चुस्कियों के साथ बात करते हुए मुद्रा जी अपने जीवन के तमाम संस्मरणों को मुझसे साझा करते हुए मेरी जिज्ञासाओं को भी शांत करते रहते हैं। प्याले में चाय कम होते देखकर बड़े भाई रोमी जबरदस्ती चाय के प्याले को पुनःभर देते हैं ताकि हमारी और मुद्राजी की वार्ता लम्बे समय तक चलती रहे। कभी-कभी वार्ता के बीच मेरे द्वारा कई प्रश्न लगातार पूँछ लेने पर मुद्राजी थोड़ा नाराज भी हो जातें है लेकिन इनकी नाराजगी भी मेरे प्रश्नों का उत्तर दे देती है। लगातार बार-बार मेरे आग्रह करने पर जब ये भोजन करने उठते हैं तो इनकी थाली को देखकर आश्चर्य होता कि एक रोटी या दो रोटी खाकर अपनी थाली पत्नी इन्दिरा देवी के सामने सरकाकर मुस्कराने लगते हैं। लगभग बयासी वर्ष की अवस्था में दाम्पत्य सम्बन्ध का इतना मधुर स्वरूप वर्तमान पीढ़ी को नया सन्देश देती है।

ऐसे ही स्नेहिल वातावरण को पाकर मैं मुद्रा जी के करीब होता गया और उनका स्नेहभाव मुझे निरंतर उत्साह, आनंद, कर्त्तव्यनिष्ठा, कठिन परिश्रम, उत्सुकता और लगन के साथ कुछ नया करने के लिए प्रेरित करता रहा। बात कुछ समय पुरानी है मैं एक दिन दोपहर के समय मुद्रा जी के घर पहुँचा संयोग से वे डॉक्टर के यहाँ गए हुए थे उनकी अश्वस्थता की बात मुझे माता जी से पता चली तो मेरा दिल काँप उठा और मैं तेजी से डॉक्टर के घर का पता पूँछकर ज्यों ही जाने को उद्यत हुआ त्योंही मुद्रा जी रोमी के साथ गली में आते हुए दिखाई दिए। उन्हें गली में देखकर मैं तेजी से दौड़कर उनके पास पहुँचा और अभिवादन करके उन्हें सहारा देने की कोशिश की उसी क्षण मुझे वहाँ उपस्थित देखकर उनकी आँखे डबडबा आयीं। उन्हें ऐसी अवस्था में देखकर अपनी आँखों में आँसू भरे हुए मैंने उन्हें मीठी झिड़की दी कि आप क्यों दिल छोटा कर रहे हैं अभी आपको बहुत सारा कार्य करना है। यह कहते हुए मैं और रोमी उन्हें लेकर कमरे में दाखिल हुए। कमरे में प्रवेश करते ही मुझे लगा कि सारी किताबें और कांपियाँ अस्त-व्यस्त हैं मैं फौरन ही अपने शर्ट को निकालकर खूँटी में टाँग दिया और किताबों को सही करने लगा। किताबों को सही करते हुए उस दिन मुझे चार घण्टे लगे फिर भी पूरी किताबें सही नहीं हो पायीं जिन किताबों की जिल्दें फट गयीं

थी उन्हें गोंद से चिपकाकर तथा नयी कवर चढ़ाकर उस पर नाम लिखते हुए आलमारियों में सजा रहा था। किताबों को करीने से सजाकर रखने का यह सिलसिला लगातार चार दिनों तक चलता रहा। पाँचवे दिन जब किताबों को पुनः सही से रखने लगा तो पोनोग्राफी की कई किताबें मेरे हाथ लगीं जिसे झपट्टा मारकर मुद्रा जी ने आलमारी के सबसे ऊपर वाले खाने में रख दी। मुद्रा जी की इस हरकत ने कुछ समय के लिए मेरे काम को बाधित किया और मैं गुस्से से लाल-पीला होकर अलग कुर्सी पर बैठ गया। मेरे मनोभाव को भाप कर मुद्रा जी मुझे पुचकारने लगे और पास बैठकर मेरी पीठ थपथपाने लगे। थपथपाने की आवाज सुनकर माता जी ने कहा क्या बात है बेटा जो तुम्हें थपथपाया जा रहा है। तो माता जी की इस बात पर मैंने मुद्राजी की ओर देखा और संकेत में ही उन्हे बताने की कोशिश की कि अभी मैं आपकी उन किताबों का राज खोल दूँगा जिन्हें आपने मेरे हाथ से झपट्टा मारकर छीन लिया है। मेरी इस बात का आशय समझकर मुद्राजी मेरी बात को दबाने के वास्ते चाय पीने की इच्छा जताई जिसे सुनकर माताजी चाय बनाने चली गयीं और मुद्रा जी वॉशरूम से हाथ-मुँह धोकर चाय का इन्तजार करने लगे। चाय पीकर ज्योंही मैंने पुस्तकों के ढेर को हटाने की कोशिश की त्यों ही भरभराकर कई पुस्तकें मेरे ऊपर आ गिरीं और मेरे नाक से खून निकलने लगा। मेरे नाक से निकलते हुए खून को देखकर मुद्रा जी घबड़ा गए और उन्होंने लगभग चीखते हुए आवाज में माता जी को बुलाकर मेरे रक्त को रूई और गरम पानी से पोंछा और हिदायत देते हुए मुझे बहुत फटकार लगाई लेकिन मैं भी जुनून में था कि आज काम खत्म करके ही दम लेना है। किताबों की आलमारियों को साफ करते हुए लगभग मिट्टी में तब्दील हो चुके एक मोटे गट्ठर को मैंने खोलने की कोशिश की लगभग 80 पेज पलटने के पश्चात एक ऐसा पन्ना मेरे हाथ लगा जिस पर लिखी गयी इबारत पूरी तरह से नष्ट होने से बच गयी थी। उस पन्ने को देखकर मैंने झट से अपनी रूमाल निकालकर उसे पोंछा और पढ़ने लगा। पूरे पन्ने को पढ़ लेने के बाद मैं तेजी से दौड़कर मुद्रा जी के पास गया और यह पन्ना (अज्ञेय चालीसा) थमाकर खड़ा हो गया। पन्ने को हाथ में लेकर मुद्रा जी पढ़ते रहे और हँसते रहे। और फिर इन्होंने इस कविता के विषय में मुझे बताया- "यह कविता मैंने शायद 1953-54 में लिखी थीं चूँकि मैं प्रयोगवाद से सहमत नहीं था इसीलिए मैंने इसकी आलोचना करनी चाही जिसके परिणामस्वरूप यह कविता लिखी गयी।" (07 दिसम्बर 2013 शनिवार, सायं 7 बजे) चूँकि वर्तमान में अज्ञेय और प्रयोगवाद दोनों साहित्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठित हैं लेकिन फिर भी प्रस्तुत कविता प्रकाशित होने पर समीक्षकों और साहित्य प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगी ऐसा मेरा विश्वास है और दावा भी। प्रस्तुत है मुद्रा जी की अप्रकाशित 'अज्ञेय चालीसा'-

अज्ञेय चालीसा-

जै अज्ञेय ज्ञान गुन सागर। जै कवीस तिहुँ लोक उजागर।।
जयतु सच्चिदानंद गोसाईं। धरत रूप बहुरूपिया नाईं।। 1।।
तुमका पाय जुड़ाई छाती। कविता के इकलौते नाती।।
मुँह मा राम बगल मां ईंटा। हिन्दी के सुथने के चींटा।। 2।।
तुम्हरे जनमत मासा होली। लै जमुहाइ कुकुरिया बोली।।
नए प्रतीक नए उपमाना। जै बजरंगी जै हनुमाना।। 3।।
नए-नए विषयन की झोली। जनु हिजरन मिलि कीन्ह ठिठोली।।
नई बात का साधि निशाना। मारि लिहेउ भल कौआ काना।। 4।।
तुम प्रतीक का मारेउ तुक्का। श्री रघुवीर चले लइ हुक्का।।
सर्वेश्वर लै अर्ध्य चढ़ावा। जामवंत मुंशी मुँह बावा।। 5।।
कुँवर सुग्रीव आरती लीन्हीं। विधि अनुकूल भारती चीन्हीं।।
विजयदेव विघनन के स्वामी। विनति करैं जे नामि गरानी।। 6।।
गुरू का प्रसाद माचवे चाखा। खग जानै खग ही की भाखा।।
प्रयोगवादी बँटी पँजीरी। फूले गाला बजी नफीरी।। 7।।
इलियट मां मारयो जब गोता। खोजि मिला नकलन का सोता।।
नए ज्ञान की खोली सिप्पी। घुटकन बैठि लगावा निप्पी।। 8।।
तार सप्तकी बिगुल बजैया। जोरे बैण्ड मास्टर भैया।।
बड़े बोल का किहे भरोसा। आँधर पुनि-पुनि निजहिं परोसा।। 9।।
औ द्वितीय सप्तक कवि आए। सँगर जमूरे गिरै न पाए।।
अरू तृतीय सप्तक कवि सूरा। सब मिलि ऐंचि उचारा मूरा।। 10।।
व्यक्तिवाद का निकरा अण्डा। पाथि लेउ गोबर के कंडा।।
भरू कोठार जनि रह्यो फिसड्डी। नाना तुमहिं पढ़ावा गड्डी।। 11।।
जनरूचि निलज जमाना नंगा। धोवहु हाँथ बहति है गंगा।।
तन मा अण्डर वियरिम तंगा। फ्रायड गुने रहत मन चंगा।। 12।।
घोरी लै काँगड़ी नचावा। नदी द्वीप मँह धूनि रमावा।।
जो तुलियन की छाँहीं डोला। तासु अटारी कागा बोला।। 13।।
जासु लहीं कासमिक किरनियाँ। सोई चखै जोबन गुर धनियाँ।।
रेखा गौरा देहिं पियाला। छप्पन छुरी बजावैं गाला।। 14।।
दिल का दाद दरद का चूरन। खाइनि मिस्टर मिसेज गफूरन।।
जिन्हिके सान चढ़ावैं शेखर। तिन्हिके बढ़े ज्ञान के टेंडर।। 15।।
नए प्रमानन कविता बूझी। अँधरहिं बड़ी दूर की सूझी।।
छोड़ि चले तुम सबहिं पुराना। गपड़ चौथ नानी औ नाना।। 16।।
मुसरिन मसकि हज्ज कहँ धावा। धन तुम्हार जनवादी दावा।।
थोरा लिखा बहुत भा जाना। समझदार का यही गियाना।। 17।।

मुद्रा जी की यह अप्रकाशित 'अज्ञेय चालीसा' जब प्रकाशित हो रही है तो यह बात बता देना भी आवश्यक है कि ये हमेशा सार्थक और तटस्थ लेखन के समर्थक रहें हैं। किसी भी रचनाकार या कलाकार का सृजन उसके पर्यावरण की उपज होते हैं और उसी से प्रेरित होकर वह अपने सृजन को मूर्त रूप देता है। कविता और आलोचना के परिप्रेक्ष्य में हुए मेरे संवादों में मुद्रा जी ने मुझे बताया भी है कि-"लेखन में मैं किसी की चापलूसी नहीं कर पाता और गुटबाजी मुझे कतई पसन्द नहीं है। मैं उन्हीं चीजों को अपनी

रचनाओं की विषय-वस्तु बनाता हूँ जो मेरे आस-पास मौजूद होती हैं। अपने लेखन के आरम्भिक दौर में मैं निराला और अन्य छायावादी कवियों से प्रभावित रहा लेकिन यह प्रभाव ज्यादा दिन नहीं रह सका। सन् 1953-54 में मैं नयी कविता के प्रभाव में आया जिसके कारण बहुत सारी कविताऐं अपने वातावरण और समाज के आस-पास की स्थिति को देखकर लिखी गयीं। मेरी यह कविता 'अज्ञेय चालीसा' भी मेरे साहित्यिक वातावरण की ऊपज है।" (12 दिसम्बर 2013,वृहस्पतिवार, रात 8:30 बजे) ऐसे ही साहित्यिक संस्कार और वातावरण के बीच मुद्रा जी साहित्य के भण्डार की श्रीवृद्धि में लगे हुए हैं। अपनी शिथिल दिनचर्या होने के बावजूद भी मुद्रा जी गंभीर विषयों पर धारदार लेखनी और परामर्श से मुझे आश्चर्यचकित कर देते हैं। मुद्रा जी का इसी प्रकार का सानिध्य, वात्सल्य और परामर्श मुझे सदैव सुलभ होता रहे इसी मंगलकामनाओं के साथ उनके प्रति सस्नेह हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उनके दीर्घायु होने की कामना भी करता हूँ।

आलेख - आंबेडकरवादी चेतना का दस्तावेज : दुनिया को बदलने किया घाव
(एक आंबेडकरवादी सामाजिक कार्यकर्ता का जीवन संघर्ष)

सोनटक्के साईनाथ चंद्रप्रकाश हैदराबाद

मानवी हक्क अभियान के संस्थापक अध्यक्ष, ग्रामिण विकास केंद्र के संस्थापक एकनाथ आवाड की आत्मकथा (मूल मराठी में जग बदल घालुनी घाव) 'दुनिया बदलने को किया वार' समकालीन प्रकाशन पुणे से 2011 में प्रकाशित हुई, अब तक इस आत्मकथा के चार संस्करण आ चूके है । आत्मकथा 211 पृष्ठ व 13 भागों में विभाजित है । एक सच्चा आंबेडकरवादी संघर्षशील सामाजिक कार्यकर्ता की कहानी है। दलित साहित्य की गौरवशाली परपंरा को देखते समय सर्वप्रथम स्मृतिस आती है वे आंबेडकरवादी आत्मकथाएँ जिसमें (विशेष मराठी) दया पवार, शंकर खरात, लक्ष्मन माने, प्र. ई. सोनकांबले, दादासाहेब मोरे, लक्ष्मन गायकवाड, डा. किशोर शांताबाई काले, बेबीताई कांबले, उर्मिला पवार आदि अनेक शेकडों आंबेडकवादी लेखकों की आत्मकथाएँ यह आज दलित साहित्य में मील का पत्थर बन गयी है । 'दुनिया बदलने को किया वार' यह आत्मकथा दलित आत्मकथा परंपरा की अगली कडी को जोडती है । डा. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों से प्रभावित होकर प्रेरणा लेनेवाले एस सामाजिक कार्यकर्ता के जीवन का अतिशय यथार्थ व समर्पक दर्शन इस आत्मकथा में दर्शित है ।

डा. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों से प्रेरणा लेकर व प्रभावित होने के बाद मेरा जीवन किस तरह बदल गया मराठी साहित्य सम्राट, दलित साहित्य के आधारस्तंभ अण्णा भाऊ साठे अपनी कविता में काव्यबद्ध वर्णन करते है –(जग बदल घालुनी घाव, मला सांगुन गले भीमराव) 'दुनिया को बदलने किया घाव, मुझे कहकर गए भीमराव' अण्णा भाऊ साठे के इस कविता में से संघर्ष करने का विचार एकनाथ आवाड ने अपने मन में लिया और अपने कार्य की दिशा निश्चित की । डा. बाबासाहेब आंबेडकर ने भारत देश के पीडित दलित बहुजन समाज को जो संदेश दिया शिक्षित बनो. संगठित बनो, और संघर्ष करो इस संदेश को एकनाथ आवाड ने अपने जीवन का मूल सूत्र माना । अतिशय गरीबी में अपनी शिक्षा पूर्ण की एमएस. डब्लु और एलएल बी किया । शिक्षा पूरी होने के बाद अपना लक्ष्य निश्चित किया और सामाजिक कार्य की शुरुवात की ।

दुकडेगाव ता. माजलगाव जिला बीड के छोटे से गाव में पोतराज के घर दलित समाज के एक मांग जाति में जन्मे एकनाथ आवाड सीधे अफ्रिका के दरबन में युनो की सभा में सरचिटनिस कोफी अनान को वैचारिक आव्हान देते है वो भी हिम्मत के साथ। यह भारत देश के लिए गौरव की बात है । अर्थिक घोर गरीबी के परिस्थिति में से लेखक को बाहर आना पडा और अज्ञान, गरीबी से पीडित मांग, नवबौद्ध, भटके विमुक्त, आदिवासी, पिछडों को राष्ट्रीय प्रवाह में लाने के लिए कठोर परिश्रम करना पडा । यह सब कैसे हुआ एकनाथ आवाड बताते है डा. बाबासाहेब आंबेडकर के द्वारा बताया गया मार्ग ही कार्यकर्ताओं का मार्ग है । विधायक संसद और कासा में कार्य करनेवाले एकनाथ आवाड आगे चलकर ' मानवी हक्क अभियान' संघटना के संस्थापक अध्यक्ष बनते है । "अभियान के माध्यम से पच्चीस-तीस वर्ष में पचास हजार से अधिक दलित भूमिहिन समाज के लोग मुझसे जुड गए । हम सबने मिलकर एक संघर्ष का प्रवास किया इस प्रवास का सूत्र था दुनिया बदलने को किया वार, मुझे कहकर गए भीमराव ।" पृ-12 लेखक अनेक देश-विदेश जाकर भारतीय दलित समाज का प्रतिनिधित्व करते है । अफ्रिका, जिनिव्हा आंतर्राष्ट्रीय मानवी हक्क परिषद में भी दलितों की भूमिका आग्रहता से रखा, जहाँ भी गए वहाँ दलितों के वेदनाओं को न्याय देने के लिए आवाज उठाते रहे । कामगार लोगों के विद्यार्थियों के लिए छात्रावास खोला, संघर्ष के लिए प्रबोधन आवश्यक है . इस धारणा से अनेक जगहों पर शिबिर आयोजित किये, कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण वर्ग चलाया, मराठवाडा नामांतर का लढा निष्ठा से संघर्ष किया। गायरान जमीन दलितों को मिलाने के लिए अभूतपूर्व मोर्चाएँ निकाला, सभाएँ ली, हजारो महिला बचत गट की स्थापना की, भूमिहिन महिलाओं के लिए स्वतंत्र बैक की स्थापना की ।

एकनाथ आवाड एक आंदोलन का नाम है । डा. बाबसाहेब आंबेडकर के विचारों को आगे बढानेवाला आंबेडकरवादी आंदोलन का संघर्षशील क्रांतिकारी नाम है । 'दुनिया बदल ने को किया वार' अनोठा एक संघर्षमय आत्मकथन है । आत्मकथाएँ तो बहुत सी लिखी गई है लेकिन एकनाथ आवाड का यह आत्मकथन प्रचलित व्यवस्था के विरुध्द एक संघर्षशील आंदोलन का लिखा हुआ, आत्मपीडा, आत्मचिंतन मनुवाद के खिलाफ अंगार है । मानवता के लिए लढनेवाला संघर्ष किसी जाति या धर्म का नहीं होता वह एक अन्याय विषमतावादी व्यवस्था के खिलाफ लढा हुआ संघर्ष होता है इस बाद की सच्चाई इस आत्मकथा में मिलती है । गरीबी, भूख, विद्रोह, जाति व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह खडा किया गया आंदोलन और आंदोलन को पूरे महाराष्ट्र से मिला प्रतिसाद और उसमें आंबेडकरवादी विचारधारा की प्रेरणा एकनाथ आवाड के आत्मकथन के हर एक पन्ने पर दिखाई देती है। मांग जाति में पुरानी प्रथा पोतराज के घर जन्में लेखक के पिताजी पोतराज थे । उनको लगता है कि अपना बेटा पोतराज बने। लेखक बचपन से ही विद्रोही प्रवृती के होने के कारण अपने पिताजी के प्रस्ताव का विरोध करते है और शिक्षा लेने की इच्छा जाहिर करते है । लेखक के पिताजी कहते है " ठीक है पढना है तो पढो, परंतु उस कुप्या के बापु महार के लडके जैसे पढना । मैं चार घर अधिक भीक माँगकर लाऊंगा,

परंतु तुम पढना जरुर । उस समय कुप्या में एक नवबौध्द समाज का लडका पढकर इंजिनियर बना था ।" –पृ.26 लेखक आगे चलकर स्वंय अपने पिताजी के बाल काटकर उनको पोतराज गी से मुक्ती दिलाते है । जो भी पोतराज दिखाई देता है उसके बाल काटकर उस घोर अंधविश्वास सी प्रथा से मुक्ती दिलाते है । लेखक समाज कार्य करते करते दलित आदिवासी भटका समाज पिछडा समाज स्त्री वर्ग में आत्मविश्वास, आत्मसमान, आत्मनिर्भर, प्रतिष्ठा बनाने का संकल्प करके उनमें चेतना पैदा करते है, गुलाम को गुलामी का अहसास कराते है ।

लेखक बचपन से ही गौतम बुद्ध के विचारों से प्रभावित थे । गौतम बुद्ध ने मानवी जीवन को चार सत्य बताया है । जीवन में दुख है, उसके निर्माण का कारण है, दुख का नाश किया जा सकता है और नाश करने का उपाय है । यह चार सत्य बौद्ध तत्वज्ञान का मूलाधार है । लेखक लिखते है –" मुझे उस समय बुद्ध का तत्वज्ञान समझने का कोई मार्ग नहीं था । परंतु मुझे लगता है, यह सत्य मुझे उस समय ही ऐसे ही समज में आयी थी। मुख्यत: शिक्षा ही मुझे मूल दुख का कारण लगा था । " पृ-38 दलितो का दुख है अस्पृश्यता, कारण है यहाँ की धार्मिक जातीय-व्यवस्था और मनुवाद है । उसका निराकरन है मार्ग है डा. बाबासाहेब आंबेडकर और उस मार्ग को प्रतिपादन करने के लिए भगवान बुद्ध है । इन चार सत्य को लेखक मे पहचाना था इसलिए वे लिखते है " शिक्षा यह शेरनी का दुध है यो पीयेगा वो गुरगुरायेगा । ऐसे डा. बाबसाहेब आंबेडकर ने कहा था । यह शेरनी का दुध अब मेरे नसनस में बसने लगा था । और शिक्षा के कारण एक शेर मेरे अंदर संचार करने लगा । वो शेर जांति-पांति के दुख को कैसे खत्म करु ? यह प्रश्न करने लगता था ।" पृ-39 एकनाथ आवाड स्पष्ट रुप से अपनी आत्मकथा में कहते है कि उनके आयु के सामाजिक जीवन की शुरुवात डा. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय नामांतर आंदोलन से शुरु हुई है । इस आत्मकथा में 20 वर्ष के दलित पैंथर के संघर्ष का कथन है । नामांतर के आंदोलन में कौन कौन शहिद हुआ उनका सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है । लेखक दलित पैंथर के सक्रिय कार्यकर्ता थे । सवर्ण हिंदुवादी लोग किस तरह दलितों पर अन्याय-अत्याचार करते है का यथार्त वास्तववादी चित्रण प्रस्तुत किया है । पोचिराम कांबले मांग जाति के एक संघर्षशील दलित पैंथर कार्यकर्ता की हत्या की गयी । नांदेड जिले के टेंभुर्णी गाव में दलित समाज के लोग स्वाभिमानी जीवन जीते थे लेकिन यह हिंदु जातिवादियों को अमान्य था । पोचिराम कांबले एक कट्टर आंबेडकरवादी अनुयायी था । आत्मकथा में दर्दनाक चित्रण प्रस्तुत है " पोचिराम कांबले के पेट में चाकु मारा गया । सौ-दो सौ लोग मिलकर पोचिराम को मारने लगे। पोचिराम भागभाग कर थक गया । अर्धमरे पोचिराम को तुम जय भीम कहना छोड दो हम तुमे छोड देंगे ऐसे हिंदूवादी लोग कहने लगे । पोचिराम ने जय भीम कहना छोडा नहीं । अर्धमरे पोचिराम के हाथ-पाय बाँधकर लकडियों पर डालकर जिंदा जलाया गया ।" पृ-46 इस प्रकार का वास्तववादी चित्रण इस आत्मकथा में देखने को मिलता है, जो पढने के बाद आँखों में आँसू और अन्याय के विरोध में संघर्ष की चिंगारी निर्माण होती है । आगे चलकर पोचिराम कांबले के बेटे का न्यावव्यवस्था पर से विश्वास उड जाता है और अपने पिताजी का बदला खून का बदला खून से लेता है क्योंकि उसने अपने पिताजी का खून अपनी आँखों से देखा था ।

दलित पैंथर ने मराठवाडा विश्वविद्यालय को बाबसाहेब का नाम देने के लिए 20 वर्ष संघर्ष किया और हिंदूवादियों ने बाबासाहेब के नाम का विरोध किया और दलितों के घर जलाया, हत्याए की, बहुत अन्याय-अत्याचार किया इससे दलितों को बहुत कुछ खोना पडा । लेखक इतने स्वाभिमानी है कि वे अपनी एलएल बी की डीग्री प्रमाणपत्र पर बाबासाहेब का नाम आने के लिए एक पेपर लिखना छोड देते है और जब 1994 को डा. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय नाम दिया गया तब लेखक परीक्षा देते है । " जब तक मराठवाडा विश्वविद्यालय को डा बाबासाहेब आंबेडकर का नाम नहीं मिलता तब तक पेपर नहीं लिखुंगा । ऐसे मैने निश्चित किया क्योंकि मुझे ला की डिग्री के प्रमाणपत्र पर डा. बाबासाहेब आंबेडकर का नाम चाहिए था । 1994 के वर्ष मराठवाडा विश्वविद्यालय का नामांतर हुआ । उसके बाद ही मैने अपना विषय तुरंत पूर्ण किया । आज मेरे ला की पदवी प्रमाणपत्र पर डा. बाबासाहेब आंबेडकर का नाम है ।" पृ-116 इस नाम से लेखक को कितनी खुशी है इसकी अंदाजा नहीं लगाया जा सकता ।

एकनाथ आवाड कासा संस्था के द्वारा सेवा करते है और बाद में स्वयं की संस्था ' ग्रामिण विकास केंद्र' निकालकर निरोधार लोगों को आधार देते है । कार्यकर्ताओं को जाग्रत करते है, शिबिर, व्याख्यानों का आयोजन करते है, अन्याय-अत्याचार के खिलाफ मोर्चा निकालते है, आंदोलन करते है और रणनीति बनाते है । जनपद गीत, लोगगीत, नाटक, कव्वाली के द्वारा प्रबोधन करते है उसी शिबिर में उनका कार्यकर्ता भीमशाहिर सुधाकर क्षीरसागर गीतों के माध्यम से प्रबोधन करते है –" सुबह की लाली दलितों के लहू की होती है, उनकी होली भी दलितों के लहू की होती है, शाम भी होती है दलितों के लहु से रंगकर, निकलो घर-घर से तुम भीमजी के शिपायी बनकर .....।" (पृ 130) इस प्रकार से वे दलित आदिवसी भटके पिछडे स्त्री वर्ग में आत्मसंघर्ष निर्माण करते है और गुलामगिरी के खिलाफ तैयार करते है । आगे चलकर 1989 में 'मानवी हक्क अभियान' नाम की संघटना बनाते है और इस संघटना के माध्यम से आज तक 50 हजार से अधिक भूमिहिन लोगों को गायरान जमीन यानी सरकरी जमीन पर कब्जा करवाया और भूमिहिनों को किसान बनाया । महिलाओं को सक्षम बनाया । केवल दलित समाज से ही नहीं बल्कि अनेक जाति-धर्म के लोग इस संघटना से जुडते है और मानवीय आधिकारों के लिए संघर्ष करते है । आदिवासियों को वेठबिगारी मुक्त करते है, भूमिहिनों को गायरान दिलाते है, भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन करते है, भुकंपग्रस्त लोगों की सहायता करते है, किसान कृषि मजदूरों के लिए सफलतापूर्वक आंदोलन चलाया, आनु. जाति-जनजाति अत्याचार प्रतिबंधक अधिनियम के आंदोलन चलाया, नवबौद्ध व मांग जाति में चल रहे द्वेष को दूर कर देते है और दोनों समाज में भाईचारा लाने का सफल प्रयास करते है और दोनों समाज में रोटी-बेटी व्यवहार कराते है ।

लेखक महिला सशक्तीकरण के प्रबल समर्थक है । लेखक ने एक ऐतिहासिक कार्य किया है जो गौरव करने लायक है । दुकडेगाव की ग्रामपंचायत के सूत्र लेखक के हाथों सौंपने की जिम्मेदारी देने की गांववालों ने विचार किया और गांववालों ने कहा कि पूरा गांव आपको बिनविरोध सरपंच बनाना चाहते है । लेखक ने अलग

प्रस्ताव रखा और लेखक ने कहा-"अपनी ग्राम पंचायत महिला सदस्यों की बनायेंगे, सात सदस्य महिला, सरपंच महिला, एक भी पुरुष सदस्य नही चाहिए। स्त्रियों को गांव की जिम्मेदारी चलाने दो। गांववालो ने मेरे प्रस्ताव को स्वीकार किया। पद्रह वर्षों से दुकडेगाव की ग्रामपंचायत महिलाओं के हाथ में है।" (पृ-170) लेखक अपने गांव में महिलाओं के लिए पतसंस्था स्थापना करते है – रमाबाई आंबेडकर बिगरकृषि पतसंस्था। इस संस्था में सभी जाति-धर्म की महिलाएँ काम कर रही है। लेखक 'मानवी हक्क अभियान' के माध्यम से जागर यात्रा निकालते है। जागरयात्रा की शुरुवात नगर जिला के खंडाला गांव से करते है। 24 सप्टेंबर के दिन मानवी हक्क अभियान के नीला-लाल रंग के झेंडे का ध्वजारोहन एक पारधी समाज के महिला द्वारा किया गया। कुछ महिने में यह जारगयात्रा गांव-गांव से आगे बढती रही और जनाधार बढता गया। गांव-गांव से अनेक जाति-धर्म के लोग शामिल हो रहे थे और बाबसाहेब आंबेडकर का कारवाँ आगे बढा रहे थे। अभियान का नारा था 'हम निकले भीम के रास्ते पर...तुम भी आओ तुम भी आओ..।' वाडवाना गांव की मुस्लिम बस्ती को गांव के हिंदूवादी जातिवादी लोग पाकिस्तान कहते है। जागरयात्र को इस गांव में शिवसेना के लोगों ने विरोध किया। लेखक लिखते है –"जलीलभाई गोलंदाज इस मुस्लिम समाज के कार्यकर्ता ने इस गांव में हमारा भव्य स्वागत किया। मुस्लिम बस्ती में बाबासाहेब के विचारों के गीत सुनने के लिए पूरा मुस्लिम समाज इकट्ठा हो गया था। मुस्लिम समाज के कार्यकर्ताओं ने हमारे कार्यकर्ताओं की अच्छी सेवा की। निकलते समय जलीलभाई को जय भीम कहा उन्होनें उत्तर में कहा इन्शाअल्ला मिलते रहेंगे....खुदा हाफिज...जय भीम।" (पृ-182) तीन महिने बाद यह जागर यात्रा नांदेड पंहुचती है। बंजारा समाज के युवा कार्यकर्ता डा.बी.डी. चव्हान ने भव्य स्वागत किया और बाद में बहुत बडी जंगी सभा हुई। लोखक कहते है कि जागरयात्रा से क्या प्राप्त हुआ ? हमने संघटना के विचार विविध जाति-धर्म के लोगों तक पहुंचाया। भटके, आदिवासी, गरीब, मुस्लिम समाज को बाबसाहेब आंबेडकर विचार ही आगे ले जा सकते है। यह हमने संघटना के माध्यम से सफल बनाया है। अनेक जाति-धर्म के लोग मुझसे जुडते गए और बाबासाहेब आंबेडकर का कारवाँ आगे बढता जा रहा है। रमाबाई आंबेडकर बिगरकृषि पतसंस्था के माध्यम से अनेक गरीब भूमिहिन लोगों को कर्ज दिया जाता है। लेखक को लगता है कि दलित समाज स्वाभिमान से जीवन जीये किसी के सामने हाथ न फैलाए। 10 डिसेंबर 2009 में सावित्रीबाई फुले म्युच्युअल बेनिफिट्स ट्रष्ट महिला बचत गट की स्थापना की। लेखक किसी कार्यक्रम जा रहे थे। रास्ते में संगम नाम का गांव आता है। गांव के प्रवेश में ही मानवी हक्क अभियान नाम की पाटी थी। मानवी हक्क अभियान संघटना महाराष्ट्र के मराठवाडा भाग में गांव-गांव में शाखा है। लेखक को किसी ने रोखने की कोशिश की लेखक को जय भीम कहकर संबोधन किया वो था महादेव सौंदरमल एक दलित किसान। एक समय उसे मजदूरी करने के अलावा कोई पर्याय नहीं था। 1972 में सरकार की ओर से 2 एकर जमीन मिली थी परंतु बैल न होने के कारण जमीन पडिक थी, महादेव भूखमरी से परेशान था। लेखक कहते है कि हमारे संघटना के माध्यम से धान्य बैंक प्रकल्प आयोजित किया गया था जिससे हजारों दलित आदिवासी भूमिहिनों की रोजी-रोटी की समस्या दूर हुई थी। महाराष्ट्र में लेखक जीजा के नाम से जाने जाते है। लेखक भूमिहिन महिलाओं के लिए बैंक की स्थापना की है। महादेव की पत्नी इस बैंक से कर्ज लेती है और पति पत्नी खेती का काम करते है। जीजा महादेव को पुछते है –"क्या महादेव काम कैसे चल रहा है? जीजा इस वर्ष 23 किंटल कपास हुआ, तीन पोती बाजरी हुई है, एक किंटल तुअर, दोन पायली मुंग, छह पायली तील हुई है .....अब कोई परेशानी नहीं है। महादेव की पत्नी कहती है जीजा आप के कारण ही हमें खेती करने का मौका मिला, लडके स्कूल जा रहे है, अच्छे घर में रहना हुआ, मेरे पति अब गांव के पोलिस पटेल बन गए है...पत्थरों के देवी-देवताओं ने हमारे लिए किया ही क्या है जीजा ? हमारे लिए तो आप ही माँ-बाप से भी अधिक बढकर आधार हो गए है।" (पृ-12) एक समय इसी गांव में पानी के लिए आंदोलन किया था और लेखक ने महादेव को ही आगे किया था। वहीं महादेव आज उसी गांव का पोलिस पटेल है। लेखक कहते है –"वा वा मेरा हृदय स्वाभिमान से भर आया है। पच्चीस तीस वर्ष में महादेव जैसे 50 हजार से अधिक भूमिहिन दलित समाज के लोग जूड गए हम सबने मिलकर एक संघर्ष का प्रवास किया। इस प्रवास के सूत्र का नाम है दुनिया बदलने को किया घाव, कहकर गए मुझे भीमराव।" (पृ-12)

मराठवाडा विश्वविद्यालय के नामांतर के बाद भी दलितों के घर जलाए गए। परभणी जिला के गिरगाव में दलितों के घर जलाए गए, दो मंजिला घर पूरी तर जलकर खाक हो गया था। दलित बस्ती जलकर खाक हो गई थी। जले हुए घर की ओर एक अधिक उम्र की महिला देख रही थी, उस महिलाने जाडे चष्में से मेरी ओर देखा आँसुओसे से उसकी आँखे चमक रही थी। लेखक कहते है –"माई बहुत नुकसान हुआ है ना। महिला ने आक्रोश में कहा अरे बेटा, जलाने दे, मेरा घर जलाने दे, पैसा जलाने दे, ज्वार जलाने दे....परंतु मेरे सीने में जो बाबासाहेब का स्वाभिमान रेखांकित है वो कोई भडवा जला सकेगा क्या? है किसी में है हिम्मत? मेरे बाबासाहेब को कोई नहीं जला सकता ...महिला अपने सीने पर हाथ रखकर कह रही थी। मेरे आँखों में पानी आया मैने कहा माई आपने सच ही कहा है, हमारे बाबासाहेब को कोई नहीं जला सकता ...मैं पुन: तुमारे गांव आउंगा...जय भीम माई।"(पृ-185) आगे चलकर लेखक संघटना के माध्यम से अन्याय-अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाया है। स्वजाति व स्वर्ण हिंदू लोगों द्वारा लेखक पर जानलेवा हमला हुआ। बीड में जिस अस्पताल में लेखक पर उपचार चालु था उस अस्पताल के डाक्टर अपने पत्नी से कहते है हम शेर पर उपचार कर रहे है। ऐसी ही एक ग्रामसभा में जातिवादी लोग लेखक पर पत्थरबाजी करने लगे गांव की दलित समाज की महिलाए लेखक का बचाव करने लगी। लेखक लिखते है –" भोजने नाम की एक वयोवृद्ध महिला आंबेडकरवादी नव बौध्द समाज की थी। उसने मेरे सिर पर कपडा रखा और कहने लगी जीजा आप के अंग को धक्का तक लगने नहीं दुंगी। पहले मैं मरुंगी परंतु आपके बाल को धक्का तक पंहुंचने नहीं दुंगी।" (पृ-187)

लेखक ऐसे अनेक स्वाभिमानी चेतना के चित्रण अपने आत्मकथा में प्रस्तुत करते है अन्य दलित आत्मकथाओं में इतनी स्वाभिमानी चेतना नहीं मिलती। 1965 के दौरान रिपब्लिकन पार्टी के माध्यम से गायरान आंदोलन चलाया गया था, उस

समय लाखों दलितों ने गायरान जमीन पर कब्जा किया था । हिंगोली जिला के औंढा तालुका में दुधाला नाम का गांव है । इस गांव में 150 के आसपास मुस्लिम फकिरों की बस्ती है । यह फकिर लोग मुंबई, पुणे, नागपुर, गुजरात, कर्नाटक, नाशिक आदि जगहों पर भीख मांगने के लिए जाते थे । रिपब्लिकन कार्यकर्ता 1964 में इस गांव को भेंट देते है और जमीन का महत्व समझाते है परंतु फकिरों ने जमीन को महत्व नही दिया था । केवल एक ही फकिर ने हिम्मत करके जमीन पर कब्जा किया था और वही सुखी जीवन जी रहा था परंतु अन्य लोग आज भी भीक मांगने लगे थे । लेखक लिखते है –"2002-2003 के दौरान जमीन आधिकार आंदोलन के कार्यकर्ता उस गांव गए मुस्लिम फकिरों को गायरान जमीन में फसल उगाने की प्रेरणा दी। दूर-दूर भटकनेवाले फकिरों को एक-दूसरे के माध्यम से संदेशा पहुंचाया गया, जहाँ-वहाँ से हर कोई अपने गांव आया और गायरान जमीन पर पुन: फसल उगाई गई । अब सर्व मुस्लिम फकिर किसान बन गए । जिस धान्य के लिए घर-घर भटकते हुए भीक मांगते थे आज वहीं धान्य फकिरों के घर बहुत प्रमाण में है। अब फकिरों के लडके स्कूल जाने लगे।"

लेखक किसी विशिष्ट जाति या धर्म के लिए नहीं बल्कि मानवता के लिए कार्य करते है । ऐसे अनेक उदाहरण इस आत्मकथा में भरे पडे है । लेखक का जीवन ही संघर्षमय जीवन है । वे संघर्ष करते समय मार खाते है और मार देते भी है और राजनीति में कुटनीति का भी प्रयोग करते है । लेखक को स्वाभिमान और अर्थिक उन्नति चाहिए लेखक के विचारों स प्रभावित होकर अनेक लोगों का अर्थिक विकास होने पर स्वाभिमानी बाणा दिखाते है। सेलु तालुका के सवने पिंपरी की राजमति ऐसे ही एक स्वाभिमानी पात्र है। राजमति 10 बचत गट की प्रमुख है । गांव से निकलते समय जीप में राजमति आगले सीट पर बैठती है उसी समय गांव का सरपंच आता है, जीप ड्रायवर राजमति को कहता है आप पीछे जाकर बैठिए –" राजमति ने पूछा क्यो ? उत्तर मिला । सरपंच साहब को आगे बैठने दो, राजमति ने कहा मैं पीछे नहीं बैठुंगी, मैं भी पैसे देती हूँ, सरपंच भी पैसे देते है, फिर मै पीछे क्यों? ड्रायवर कहने लगा आप दूसरे गाडी में आईये, राजमति को घुस्सा आया और कहने लगी तेरे गाडी की किमत बता अभी के अभी तेरी जीप खरीद लेती हूँ, परंतु मैं इसी जीप में और आगे की सीट पर ही बैठकर जाउंगी। राजमति ने अपने पिशवी में ड्रायवर को पैसे दिखाये। अखिर सरपंच पीछे हट गया । राजमति आगे के सीट पर बैठकर ही मिंटिग को आयी ।" (पृ-208) ऐसे अनेक स्वाभिमानी पात्र इस आत्मकथा में हमें देखने को मिलते है । आगे चलकर लेखक बहुजन समाज पार्टी से लोकसभा का चुनाव लढते है । 1996 में बहुजन नायक कांशीराम ने लेखक को कहा था " तुम व्हिक्टीम बनो, लढके हारना आज की जरुरत है, आज हम हरेंगे तो कल की जीत हमारी होगी। बाबसाहेब आंबेडकर जिसं हत्ती के चिन्ह पर चुनाव लढा था मैं उसी हत्ती के चिन्ह पर चुनाव लढा ।" ऐसे ही एक समय लेखक एक पुस्तक स्टाल पर किताबें देख रहे थे। एक वयोवृध्द महिला अशिक्षित, अनपड दिखती थी। एक किताब के मुखपृष्ठ पर बाबासाहेब आंबेडकर का फोटो था। उस किताब को आगे-पीछे देखती है । स्टाल का मालिक कहता है किताब को नीच रखिये । "महिला कहती है किताब की किंमत कितनी है ? स्टाल मालिक कहता है 250 रुपये । महिला अपने पिशवी से 250 रुपये निकालकर देती है, स्टाल मालिक कहता है माते 200 रुपये ही दीजिए आपको पच्चास रुपये डिस्काउंट । महिला कहती है – मेरे बाबासाहेब के किताब का मोलभाव करु क्या रे बेटा? मुझे पढना नहीं आता मेरे पोते की ओर से इस पुस्तक के शब्द-शब्द पढकर सुनुंगी, ये ले 250 रुपय। महिला वहाँ से निकल जाती है । मै उसे पीछे से देखता रहता हूँ । कई समय तक समझ में नही आया...कई समय तक आँखे भर आयी । ऐसे सुवर्ण क्षणों के लिए ही तो मैं जीवन जी रहा हूँ ।" 2006 में प्रसिध्द लेखक लक्ष्मन माने ने भटके लोगों का बौध्द धर्मांतर जाहिर किया था । लेखक ने प्रस्ताव रखा कि हम सब मिलकर धर्मांतर करेंगे । पारधी, कैकाडी, भिल्ल, जोशी, बेलदार आदि अनेक भटके जातियों के साथ लेखक और उनके हजारो कार्यकर्ता बौध्द धम्म को जाहिर रुप से स्वीकार करते है । वो दिन था 2 आक्टोबंर 2006 स्थान मुंबई । जपान के भंते सुरई ससाई ने 2 लाख से अधिक लोगों को बौद्ध धम्म की दीक्षा देते है । बुद्धम् शरणम् गच्छामी, धम्मम् शरणम् गच्छामी, संघम् सरणम् गच्छामी ।

लेखक एक कार्यकर्ता बायजा अपने गायरान खेती के लिए कोर्ट में जाता है। न्यायालय में जज के सामने खडा हो जाता है । न्यायालय का सेवक कहता है कि कहो ईश्वर की शपथ लेता हूँ सच बोलता हूँ ,झूठ नहीं बोलुंगा । बायजा कहता है " मेरा ईश्वर पर विश्वास नहीं है । मैं भारतीय संविधान की शपथ लेता हूँ । सच बोलता हूँ झूठ नहीं बोलुंगा।" यह था बौध्द धम्म स्वीकार करने के बाद का आंबेडकरवादी स्वाभिमानी बाणा। ऐसे अनेक उदाहरण आत्मकथा में है।

इस आत्मकथा का समारोप करते समय लेखक अपने पिताजी के एक वाक्य को संबोधित करते है । पोतराज बनकर भीक माँगते समय बाबा कहते थे पाँच का पचास होने दे, गाय-गुरे वाडा भरने दे, वेल झोपडी तक जाने दे । बाबा के इस वाक्य के अनुसार फुले आंबेडकर का बीज मुझ में आया, उसका अंकुर मेरे मन में बढता गया, कालांतर से वेल बढता गया अखिर वेल लक्ष्य तक पहुंच गया । एकनाथ आवाड की कहानी जितनी रोमहर्षक है उतनी ही विचारप्रवन भी है। मराठवाडा के 1950 से 2010 तक का यह सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, अर्थिक कारकिर्द का लेखाजोखा लेनेवाली यह पुस्तक केवल लेखक का जीवन चरित्र ही नहीं बल्कि वह 60 साल का ऐतिहासिक सामाजिक दस्तावेज है ।

आलेख - 'लोक गीतों में नारी विमर्श'

डॉ.नयना डेलीवाला
आहमदाबाद (गुजरात)

किसी भी भाषा की सशक्तता एवं समर्थता तभी निश्चत होती है,जब उसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म मानव विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने की क्षमता हो।दूसरे शब्दो में कहें तो --माधुर्य,सरसता और प्रांजलता भाषा के श्रेष्ठ गुण हैं।लोक-साहित्य इन सभी गुणों से पूर्ण होता है।इसीलिए इसे 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा कहा गया है।'भारत जैसे महान देश की भिन्न-भिन्न भाषाओं में प्रवाहित,जन हृदय का प्रकृत और मधुर रूप,लोक संस्कृति का संस्कार करता है।लोक गीतो में जनमानस का उर्मिल रूप अधिक निखरता है।गीतों के सौम्य एवं आर्द्र स्वरों में इह लोक की सृष्टि होती है।

डॉ.वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दो में "लोक हमारे जीवन का महा समुद्र है,उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है।लोक राष्ट्र का अमर स्वरुप है, लोक कृत संज्ञान और संपूर्ण अध्ययन में सब शास्त्रों का पर्यवसान है। अर्वाचीन मानव के लिये लोक सर्वोच्च प्रजापति है।

आधुनिक साहित्य की नवीन प्रवृत्तियों में 'लोक ' का प्रयोग गीत,वार्ता,कथा,संगीत,साहित्य आदि से युक्त होकर साधारण जनसमाज जिसमें पूर्व-संचित परंपराएँ,भावनाएँ,विश्वास और आदर्श
सुरक्षित हैं तथा जिसमें भाषागत सामग्री ही नहीं अपितु अनेक विषयों के 'अनगढ़ किंतु ठोस रत्न छिपे हुए हैं,' अर्थ में होता है।

लोक गीत क्या है ? लोक गीत आदि मानव का उल्लासमय संगीत है।गुफाओं में पनपते हुए मानव में जब थोडी बहुत बुद्धि आई और उसके आधार पर उसमें भावनाओं के अंकुर फूटे तो व्यक्त करने के लिये उसने विकृत प्रलाप प्रारंभ किया। यही आदि संगीत।

पेरी के शब्दो में 'लोक- गीत' है।(This Spontaneous Music has been called Folk-Songs)

राल्फ विलियम्स ने कहा है --- 'लोकगीत न पुराना होता है न नया।वह तो जंगल के वृक्ष की भाँति है,जिसकी जड़े जमीन में धंसी हुई है परंतु उसमें निरंतर नई-नई शाखाएँ-फूल-फल-कोंपलें पुष्पित पल्लवित होती है।' तो ग्रिम के शब्दों में— लोकगीत अपने आप बनते हैं।

हमारे जीवन की विकास गाथा ही लोकगीत है जिसका मूल जातीय संगीत में हैं। लोक-गीतों द्वारा किसी जाति की संस्कृति का संप्रेषण होता है। इसीलिये लोक-गीतों को सांस्कृतिक -वैभव,रीति-रिवाज़ ,परंपराओं,धार्मिक विश्वासों तथा मानव की अन्य सामाजिक – सांस्कृतिक गतिविधियों का संवाहक कहा गया है। ये काल एवं समय के प्रभावों से मुक्त, प्रत्येक युग में मानव-मन को आंदोलित करते रहे हैं।

इन गीतों को जीवन प्रदान करने का श्रेय लग्न-उत्सवों,हिंदु पर्व-त्योहारों को है।रक्षा-बंधन,कजरी तीज,रतजगा,यम-द्वितीया,दीप-मालिका,जीवित-पुत्र व्रत कथा,छठ आदि उल्लेखनीय हैं।कंजरों और भाटों के दल, जो काफ़िला स्थान-स्थान पर पड़ाव डालते-फिरते है,पुरातन लोक साहित्य के चलते-फिरते पुस्तकालय है। लोक-गीतों को प्रोत्साहन देने में मुसलमानों का करुण- पुर-दर्द नर्सियों का बड़ा योगदान है।

संस्कार भारतीय जीवन की नींव है।जिस प्रकार रसायन बनाने में कई रसों को खरल करना, अग्नि में जलाना, तपाना पड़ता है, तब कहीं जाकर रसायन ठीक रुप में तैयार होता है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य को भी समय-समय पर विभिन्न आध्यात्मिक उपचारों द्वारा सुसंस्कृत करना पड़ता है। ये महत्वपूर्ण पद्धति भारतीय तत्ववेत्ताओं ने विकसीत की थी। मानव को सुसंस्कृत करने हेतु शिक्षा, सत्संग, वातावरण, परिस्थितियाँ आदि अनेक बातें आवश्यक होती है। इस आध्यात्मिक उपचार का नाम संस्कार है। जो विधि-विधान संस्कारों में चले आ रहे हैं उसकी मनोवैज्ञानिक एवं धर्मानुमोदित क्रिया, मनुष्य को एक विशेष मनोस्थिति में पहुँचा देती है। औक एक गहरी छाप छोड़ जाती है।

आज सोलह संस्कारों की परंपरा बड़ी प्रचलित है, सूरसागर में भी सोलह संस्कारों का उल्लेख मिलता है ----

1 गर्भाधान 5 नामकरण 9 कर्णवेध
13 गृहस्थ 2 पुसवन 6 निष्क्रमण 10
वेदारंभ 14 वानप्रस्थ 3 सीमन्तोन्यन
7 अन्नप्राशन 11 समावर्तन 15 संन्यास
4 जातिकर्म 8 चूड़ाकर्म (मुण्डन)
12 विवाह 16 अन्त्येष्टि संस्कार

** जन्म संबंधी गीत---- नववधू के घर में कदम रखते ही कामना की जाती है कि इस घर के वंश को अग्रसर करेगी।जब तक कोख भर नहीं जाती बाँझ के ताने से नहीं बच पाती। पीड़ा सहने में असमर्थ वह कहती है---

ए मोय सब दुःख दियो भगवान, एक दुख भरी कोख को।

** पुत्र जन्म के उफलक्ष्य में---- पुत्र जन्म का अवसर जीवन की सबसे बड़ी सिद्धी का आनंद माना जाता है एक स्त्री के जीवन का।पुत्र जन्म के गीत को सोहर कहते है। अवध में राम जन्म भूमि के कारण गीतों में राम-सीता के वर्णन अधिक मिलते है।–

चैत रामनवमी श्री रामजी के जनम भये
धगरिन त नेग मांगे, नार के छिनौनी(नाल काटना)

राजस्थान में पुत्र जन्म पर रात-रात भर जागकर 'होलर गीत' गाये जाते है। मुसलमान प्रजा में भी ये गीत प्रसिद्ध है।-----

रंग महल बिच जच्चा होलर जायो, ये पीलारी मौज ये।

** चूड़ाकर्म संबंधी ------ पहलीबार होनेवाले मुण्डन के लिया इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।इसे समारोह के रुप में मनाया जाता है क्योंकि उस वक्त मस्तिष्क के विषय में सोचा जाता है, मस्तिष्क के विकास एवं सुरक्षा पर विशेष चिंतन किया जाता है। ये संस्कार बच्चा एक, तीन या पांच साल के होने पर किया जाता है।

क़दम-क़दम पर स्त्री-जीवन के सुनहले गीत मिलते हैं। एक-से-एक मार्मिक गीत।किसीकी आँखों में प्रसन्नता का वसंत,तो कहीं मुसीबतों की बदली।किसी के मुख पर संध्याकालीन एकांत,कहीं मुख पर मौत का सा अंधकार। किसी के अश्रुकण-प्रकाश में चमक रहे हैं,तो किसी के आंसू अँधेरे में बन्द।लोक-गीतो में नारी–जीवन की करुणासभर वेगवतीधारा का एकांत भाव प्रवाहित है। नारी जीवन के मार्मिक दृश्य,सामाजिक स्थिति के गोरख धंधे, ग्राम प्रदेश के चित्र, मज़हब की नाजबरदारियाँ, समाज का खोखलापन, ननद-भौजाई के राग-द्वेष,ससुराल में नववधु
की व्यथा और सास-ननद के अत्याचार चित्रपट की तरह हू-ब-हू आँखों के सामने से गुजरते हैं।

गवना के गीत का उदाहरण जिसमें लड़की के विदा होते समय की करूणता के चरम को मार्मिकता से शब्दो में पिरोया है, उसमें भी भाषा अवधी का निखरा रूप देखिये-----

भितरे बैठि गोहरावै मइया/ अंचरा में पोंछै आँसू/ मोरी बेटी आजु चली है परदेशवा,
कोखिया भई मोरी सूनी/ सभवा बैठि के रोवै बाबा/ पटके म पोंछै आँसू/
आजु मोरी बेटी चली है ससुररिया/ भवन भए मोरे सुन।

आज भी गांवों में यह धारणा विद्यमान है कि जितना ध्यान हम बेटी पर देते हैं उतना बेटी पर नहीं दे पाते क्योंकि वह पराई है।

श्रम संबंधी गीतों का भी खूब प्रचलन है। महिलाएँ कहीं भी समुह में काम करते हुए गाती है।थकान का पता नहीं चलता।इसमें रोपनीं, निहवही, कटनी के गीत प्रमुख है।देखिये इस उदा. में कामों के बोझ का ज़िक्र हुआ है -----

जहिया से आयो पिया तोहरी महलिया/ रतिया दिनवा करौ टहलिया रे पियवा/
देहिया झुरानी मेरी करत टहलिया/सपना में सुख के सपनवा रे पियवा/
बखरी के हरा तुहैं जोत्या रात दिनवा/ तबहुँ न भर पेट भओजनवा रे पियवा।

इन लोक-गीतों में विरह के गीतों का तो कहना ही क्या ? ग्रामीण स्त्रियों के कंठ से निकलनेवाले लफ्जो में न जाने कितनी वियोगिनीयों के हृदय तड़प रहे हैं। कितने घायल हृदयों के अरमान आँसू की बुँदों में ढुलक रहे हैं। नारी की विरह दशा का जीवित चित्र देखने के लिये लोक-मानस की सैर कीजिये।

बन्ध्या स्त्री समाज के लिये कलंक मानी जाती है।संतानहीन पति-पत्नी को लांछित जीवन व्यतीत करना पड़ता है।ऐसी स्त्री के साथ सास-ससुर का अपमानपूर्ण व्यवहार होता है। थककर उसे आत्महत्या के अलावा कोई विकल्प नहीं सुझता.....

गंगा किनारे एकु गोरिया गंगा मनावै।
गंगा एकु तुम लेउ डूबन हम आइन।
की तुम सासु-ससुर दुख नैहर दूरि बसै।गोरिया कि तोरे हरि परदेस कउने गुनु डुबिहऊ।
न हम सासु,ससुर दुख नैहर दूरि बसै।गंगा मोरे हरि परदेश,कोखिया बिनु डुबिहऊँ,
बलक बिनु डुबिहऊँ।

इस प्रकार बाँझ की दर्दनाक वेदना और पीड़ा का भाव वर्णित है।

कहीं पर वधू अपने परिवार की भूरि-भूरि प्रशंसा करती नज़र आती है-----

मेरे ससुर बड़े दिलदारिया,सासुरानी खांडे केरी धार।
मोरे जेठ हाथन के काँकना,जेठनिया हियरे बीच हार।
मोरे देवर हमारे दिल आँगिया,देवरानिया सलुए बीच कोर,
धनि धन्नि बहू तेरी जीभ,का बखान्यौ हमारा परिवार।

सासु अपनी बहु के इस व्यवहार की सराहना करती हुई साधुवाद देती है। इसी प्रेमपूर्ण व्यवहार से, संयुक्त परिवार के आनंद और परस्पर स्नेह द्वारा समाज की दृढ़ता का परिचिय मिलता है, जो सुंदर लोक जीवन का एक आदर्श है।

अनमेल विवाह का वर्णन भी इन गीतों में मिलता है।ससुराल में लड़की को जब भूमि पर सोना पड़ता है और वह भी अकेले। तब वह अपने पिता को कोसती है,उलाहना देती है----

आँचलु खोलि दादुलि भुइयाँ पै लोटहिं,
रैन मा रहौ अकेली।
मरिहऊँ मैं नउआ,मरिहऊँ मैं बरिया,
मरिहऊँ बभ्भन जी के पूत।
जिन मेरी बेटी का विदेशी वरू,
ढूँढ़ा रैनहु मा रहे अकेलि।

इनगीतों में दहेज प्रथा का भी उल्लेख हुआ है।विवाह से अधिक महत्वपूर्ण दहेज हो गया और विवाह के निश्चित होने के पूर्व वरपक्ष के सामने कन्यापक्ष वाले घर के सारे बर्तन आदि निकालकर रख देते हैं पर दहेज कभी पूरा नहीं होता------

बाजी बरात मड़ये तरै आयी,नौ लख दायज होय।
भितरा के बासन आँगने धरि दीन्हेन्हि दिया दायज नहि होय।।

विवाह समाप्त होने पर दुलहिन डोली में विदा होती है उस समय एक विशिष्ट शैली का गीत गाया जाता है जो विदाय गीत या समदाउनि के नाम से प्रसिद्ध है।उस समय संवेदनशील गीतों को सुनकर कठोर हृदयवालों की आँखों में सावन-भादों की झड़ी लग जाती थी और उनकी वियोग वेदना से हृदय फटने लगता था--------

अँखिया से आँसुआ ढुलत होइहैं ना।
गजमोती अँछरा भिजत होइहैं ना।
फूल परिजत वा झरत होइहैं ना।
लड़कईयाँ कै नहिया टूटत होइहैं ना।

लोकगीतो में विरह के गीत भी मिलते हैं,आज भले ही वह अतिशयोक्तिपूर्ण लगे पर जब रचे गये थे तब की स्थिति पर सोचे तो सहज स्वाभाविक जान पड़ते है।एक विरहिणी अपनी सखी से कहती है कि सखी! चारों ओर सघन काली घटा उभर आयी है,बूँदे झहर-झहर कर पलंग पर गिर रही है और मेरी कुसुम रंग की चुनरी भीग रही है।मेरी यह छोटी सी फूस की झोंपड़ी चू रही है।प्रियतम के बिना संसार अधूरा है।

बारहवीं शताब्दी से यह गीत लोक जिह्वा पर गुनता है जिसमें बेटी अपने लखिया बाबुल
से शिकायत करती हैं कि भाई को तो महले-दुमहले मिले और उसके हिस्से में आया परदेश---

काहे को ब्याहे विदेस से लखिया बाबुल मेरे,

भैया को दीन्हें बाबुल महला-दुमहला
हमका दिए परदेस
रे लखिया बाबुल मेरे।

स्त्री मनोविज्ञान की यथेष्ठ समज के लिये जाँत-गीतों का अध्ययन भी आवश्यक

है।इस पर टिप्पणी करते हुए सुमन राजे ने खूबसूरती से कहा है---यह लोक-साहित्यों का एक एकांत कोना है जहाँ स्त्रियाँ एक पहर रात रहे उठकर चक्की चलाती हुई अपनी व्यथा-कथा कहती है।

एक गीत में, जब बहू का भाई उसे मिलने आता है।वह बड़े चाव से पूछती है---क्या भोजन बनाये,तो सास कहती है कि कोदो और मसउढ़ा बना दो।कोदो एक प्रकार का निकृष्ट चावल है और मसउढ़ा एक प्रकार की घास। तब वह दुःखी होकर भाई से कहती है----

कै मन कूटौ भैया कै मन पीसा रे ना।
भैया कै मन सिझवँउ रसोइया रे ना।।
सास खाँची भरि बसना भजारै ना।।

चैती के महिने में गाये जानेवाले गीत को चैता कहते हैं।भोजपुरी में उसे घाँटो भी कहते है। अन्य लोक साहित्य की तुलना में चैती गाना कठिन है।इसमें कंठ की मधुरता,आरोह-अवरोह,
लयात्मकता आदि आवश्यक है।कहा जाता है-----

कजरी,बिरहा सब कोई गावै,
सब कोई गावै फाग।
चैता मनवा केऊ-केऊ गावै,
जेकर राग-सुराग।

चैती की एक लाक्षणिकता है कि वह पुरुषों की गायन-शैली है,किंतु इसमें निवेदन मुख्यतः स्त्री भावनाओं का होता है।

साठ प्रतिशत लोकगीतों की सर्जक-संवाहक नारियाँ ही होती है।पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर लोक-गीतों व लोक नृत्यों में साथ देनेवाली महिलाएँ ही होती है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक प्रदेशों में भाषा-बोली क्षेत्रों व अंचलों में स्त्रियाँ ही अधिक संवेद्य और मुखर है।

लोक-गीतों में नारी के विवध रुप,मनों भाव,शिकायत,नफरत,प्रेम,लज्जा,सहन शीलता,करूणा के चित्र हमने उद्घाटित होते देखे। कहीं वह निषेधात्मक रुप में नजर आती है तो कई स्थानों पर विधेयात्मक रुप भी उभरता है।प्रेम की फुहारे करनेवाली नारी समय रहते विरह की पीड़ा भी अपने ही पिय के पास गाती है। उसके प्रेम की पराकाष्ठा इस रुपमें देखने मिलती है कि वह मछली बनकर जल के बीच रहना चाहती है ताकि उसके प्रियतम जब स्नान करने आवे तो उनके चरण चूम ले----

जइतों हो राम
आहो रामा मोरा हरि होइतो मैं जल की मछरिया
जलहि बीचे रहि अइतें असननवा
चरन चूमि लेइतीं हो राम।

पति का वियोग उसे सह्य नहीं है। पति के परदेश जाने पर वह एक अचेतन पदार्थ बनकर उनके संग जाना चाहती है।एक स्त्री लौंग की लता को संबोधित करते हुए कहती है---

जो मैं जनतेउ लवँगरि एतना महकतिउ
लवँगरि रँगतेउ छयलवा के पाग।

पत्नी अपने प्रिय को अँगूठी का नगीना समझती है।मिलन की रात में चाँद को उगने से रोकना चाहती है और रात जल्दी शेष न हो,इसलिये सूरज को देर से उगने का अनुरोध करती है।प्रिय विरह से उनकी आँखे सराबोर है।काजल जल बन जाता है,शरीर लहर – सा बह उठता है----

नयन सरोवर काजर नीर
ढ़रकि खसल सखि धनक सरीर।

पत्नी में प्रेम के अतिरिक्त सेवा का भाव भी प्रबल होता है।साँझ की बेला में पति जब थका हारा खलिहान से आता है तो वह अँजुरी में जल लेकर उसका मुख धुलाती है,होले-होले पंखा डुलाकर उनकी थकान दूर करती है-----

साँझ के बंरिया पिया एलिन खरिहनवा से
डोला वहइ गोरिया रसे रसे वेनियाँ।

आज की दौड भाग की जिंदगी में लोक गीतों का महत्व कम होता जा रहा है,क्योंकि नारी के पास आज समय की कमी है,बल्कि समय ही नहीं है कि वह शादी-ब्याह के लोकोत्सव में भाग ले सके। कामकाजी महिला आर्थिक व्यवस्था को बनाने-सुधारने में स्वयं समाज से कटती जा रही है।जब नारी स्वयं ही भाग न ले, न ही लोकगीतों में रुचि रखे तो वह अपनी संतान को गाने के लिये कैसे प्रेरित कर पायेगी।पाश्चात्य सभ्यता की ओर बढ़ते आज के बच्चे लोकोत्सव में संस्कारित गीत न गाकर कोई अंग्रेजी धुन की कैसेट चलाकर उस पर डांस करना पसंद करते हैं।ऐसे में लोक-गीतों का प्रचलन दिनोंदिन कम होता जा रहा है। यही समय है लोकगीतों के संरक्षण करनेका।इसके संरक्षण की निहायत आवश्यकता है,इसके लिये भारतीय नारी को ही अग्रसर होना होगा।आनेवाली पीढ़ी को इसका महत्व समझना पड़ेगा।नई पीढ़ी को समझना चाहिये कि लोकगीत लोक के मन की घड़कन है जिसमें जीवन धड़कता एवं पनपता है।

लोकगीत नीति-शास्त्र का अखूट खजाना है।इसका संरक्षण करना बहुत मुश्किल काम है,क्योंकि यह लिखित तो होते नहीं।एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को पैतृक संपति के रुप में सौंपती चली आती है।इसका माध्यम होता है केवल कंठ ।

अंत में मैं यही कहूँगी कि भारतीय संस्कृति में लोकगीतों का महत्व आज से नहीं,शुरु से चला आ रहा है। जैसे जलेबी में रस,बगीचे में फूल, फूल में सुगंध, महीनों में फागुन और नाटक में राग का है, वही लोक जीवन में लोकगीतों का महत्व है। किसी भी राष्ट्र की भौतिक पहचान उसकी भौगोलिक सीमाओं, कल-कारखानों, उद्योग-धंधा, गाँव-नगर और महानगर, गगनचुंबी अट्टालिकाओं से होती है, लेकिन उसकी सांसकृतिक पहचान तो धर्म,संस्कृति, दर्शन, कला की साधना से होती है।इन सबका सृजन लोकगीतों की भूमि पर होता है जिसकी उर्वरता नारी की भूमिका पर निर्भर करती है।

થાંભલીનો ટેકો ને ઓસરીની કોર
કણબીની છોકરી એ પાળ્યો રે મોર
મોર ટહુકા કરે,મોર ટહુકા કરે હે....હે...મોર ટહુકા કરે.....

थांभलीनो टेको ने ओसरीनी कोर
कणबीनी छोकरी ए पाळयो रे मोर
मोर टहुका करे, मोर टहुका करे हे...हे....मोर टहुका करे.....

(सारांश---खंभे का सहारा और दालान का छोर, कणबी(पटेल, जो विशेषतः खेती के काम के लिए प्रचलित है) की बेटी ने पाला है 'मोर'। मोर टहुका करें हे...हे...हे... मोर टहुका करें।)

नव साहित्यकार

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय मासिक वेब पत्रिका

मुखपृष्ठ

सम्पर्क

डॉ.सुनील जाधव
हनुमान गड कमान के सामने,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
नांदेड-४३१६०५
महाराष्ट्र
चालभाष :- ०९४०५३८४६७२

रचनायें आमंत्रित हैं ..

अगस्त, सितम्बर संयुक्त अंक हेतु शोध विशेषांक के लिए रचनायें आमंत्रित है ।

अंतीम दिनांक : 31जुलाई, २०१५
फॉण्ट : यूनिकोड / कृति देव वर्ड फाइल में ही भेजें |
पीडीएफ आदि फाइल अस्वीकृत की जायेगी |
एक पासपोर्ट फोटो अवश्य भेजना होगा |

हमारा मेल पता हैं :-
sunil@navsahitykar.com
suniljadhavheronu10@gmail.com

पाठक प्रतिक्रिया आमन्त्रण

नवसाहित्यकार पत्रिका पाठकों की प्रतिक्रिया आमंत्रित कर रहा हैं | आप की प्रतिक्रिया हमारे लिए अमूल्य सिद्ध होगी | अब तक कई सुधि पाठकों आलोचकों की प्रतिक्रियाँये आई हैं | किन्तु हम उन्हें किन्ही कारण वश प्रकाशित नहीं कर पाये | आनेवाले अंक में पाठक प्रतिक्रियाँ का स्तम्भ चलाया जायेगा | जिसमें सम्पादक मंडल द्वारा चयनित प्रतिक्रियाँओं को पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा |आपक की प्रतिक्रिया यूनिकोड / कृति देव फॉण्ट वर्ड फाइल में निम्न इमेल पते पर अपेक्षित हैं |

sunil@navsahitykar.com